राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

RNI.No. UPHIN/2012/43078

स्वतंत्र प्रभात

जो लिखेगा, वही टिकेगा

स्वतंत्र प्रभात दैनिक अख़बार तथा ऑनलाइन चैनल से सीधा जुड़ने के लिए संपर्क करे 9511151254

@swatantraprabhatmedia | @swatantramedia | 9511151254 | epaper.swatantraprabhat.com | @SwatantraPrabhatonline | news@swatantraprabhat.com

सीतापुर से प्रकाशित एंव अयोध्या ,प्रयागराज ,मिर्जापर ,गोरखपुर , बरेली ,बुंदेलखंड , उत्तराखंड , देहरादून

सीतापुर, शुक्रवार , 28 मार्च 2025

वर्ष 13, अंक 331, पृष्ट 04,मूल्य: 01 रुपया

www.swatantraprabhat.com

गाज़ियाबाद , दिल्ली , हरियाणा , चंडीगढ़ , झारखण्ड , बिहार , मध्य प्रदेश ,असम, तेलंगाना आदि जनपदो में प्रसारित

सेवा, सुरक्षा और सुशासन नीति कार्यक्रम में बजाया....03

ईद की नमाज से पहले प्रतिबंधित पशुओं को अभियान चलाकर...04

सुप्रीम कोर्ट ने इलाहाबाद हाईकोर्ट के फैसले पर रोक लगाई

कहा गया था कि नाबालिग लड़की के स्तन पकड़ना और पायजामा का नाड़ा तोड़ना बलात्कार का प्रयास नहीं था

प्रयागराज। सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को इलाहाबाद हाई कोर्ट के उस विवादित आदेश पर रोक लगा दी जिसमें कहा गया था कि नाबालिग लड़की के स्तनों को पकड़ना, उसके पायजामे का नाड़ा तोड़ना और उसे पुलिया के नीचे खींचने की कोशिश करना बलात्कार के प्रयास के अपराध के अंतर्गत नहीं आएगा। हाई कोर्ट ने कहा था कि ये कृत्य प्रथम दृष्टया पाक्सो अधिनियम के तहत गंभीर यौन उत्पीड़न का अपराध होगा, जिसमें कम सजा का प्रावधान है। न्यायमूर्ति बीआर गवई और न्यायमूर्ति एजी मसीह की सर्वोच्च न्यायालय की पीठ ने उच्च न्यायालय के आदेश के खिलाफ स्वत- संज्ञान लेकर शुरू किए गए मामले पर विचार करते हुए, जिसने काफी सार्वजनिक आक्रोश पैदा किया था, उच्च न्यायालय के दृष्टिकोण से अपनी कड़ी असहमति व्यक्त की। पीठ ने कहा कि उच्च न्यायालय का आदेश चौंकाने वाला था। पीठ ने आदेश में कहा, हमें यह कहते हुए कष्ट हो रहा है कि विवादित निर्णय में की गई कुछ टिप्पणियां, विशेषकर पैरा 21, 24 और 26, निर्णय के लेखक की ओर से संवेदनशीलता की पूर्ण कमी को दर्शाती हैं। पीठ ने कहा कि यह फैसला अचानक नहीं सुनाया गया था, बल्कि करीब चार महीने तक इसे सुरक्षित रखने के बाद सुनाया गया था। इसका मतलब यह है कि न्यायाधीश ने उचित विचार-विमर्श और दिमाग लगाने के बाद फैसला सुनाया। पीठ ने कहा कि चूंकि टिप्पणियां कानून के सिद्धांतों से पूरी तरह अनजान हैं और पूरी तरह से असंवेदनशील

और अमानवीय दृष्टिकोण को दर्शाती हैं, इसलिए टिप्पणियों पर रोक लगाना मजबूरी है। पीठ ने भारत संघ, उत्तर प्रदेश राज्य और उच्च न्यायालय के समक्ष पक्षकारों को नोटिस जारी किया। भारत के सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता आज पेश हुए और उन्होंने फैसले की निंदा करते हुए कहा कि यह चौंकाने वाला है। यह संज्ञान एनजीओ वी द वूमेन ऑफ इंडिय की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता शोभा गुप्ता द्वारा भेजे गए पत्र के आधार पर लिया गया है। अभियोजन पक्ष का कहना है कि आरोपी पवन और आकाश ने 11 वर्षीय पीड़िता के स्तनों को पकड़ा और उनमें से एक आकाश ने उसके पायजामे का नाड़ा तोड़ दिया और उसे पुलिया के नीचे खींचने की कोशिश की। इसे यौन अपराधों से बच्चों के संरक्षण अधिनियम, 2012 के दायरे में बलात्कार के प्रयास या यौन उत्पीड़न के प्रयास का मामला पाते हुए, संबंधित ट्रायल कोर्ट ने POCSO अधिनियम की धारा 18 (अपराध करने का प्रयास) के साथ धारा 376 को लागू किया और इन धाराओं के तहत समन आदेश जारी किया। हालांकि, उच्च न्यायालय ने इसके बजाय निर्देश दिया कि आरोपी पर धारा 354-बी आईपीसी (नंगा करने के इरादे से हमला या आपराधिक बल का प्रयोग) के मामूली आरोप के तहत मुकदमा चलाया जाए, जिसे POCSO अधिनियम की धारा 9/10 (गंभीर यौन उत्पीड़न) के साथ पढ़ा जाए। इस आदेश ने एक बड़ा विवाद खड़ा कर दिया, जिसमें कई लोगों ने इसकी आलोचना की। न्यायमूर्ति राम मनोहर नारायण मिश्रा की पीठ ने 3 आरोपियों द्वारा दायर आपराधिक पुनरीक्षण याचिका को आंशिक रूप से स्वीकार करते हुए कहा÷आरोपी पवन और आकाश के खिलाफ लगाए गए आरोप और मामले के तथ्य इस मामले में बलात्कार के प्रयास का अपराध नहीं बनाते हैं। बलात्कार के प्रयास का आरोप लगाने के लिए अभियोजन पक्ष को यह स्थापित करना होगा कि यह तैयारी के चरण से आगे निकल गया था। अपराध करने की तैयारी और वास्तविक प्रयास के बीच का अंतर मुख्य रूप से दृढ़ संकल्प की अधिक डिग्री में होता है, । यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि न्यायमूर्ति बेला एम. त्रिवेदी और न्यायमूर्ति पी.बी. वराले की सर्वोच्च न्यायालय की पीठ ने हाल ही में आदेश को चुनौती देने वाली अनुच्छेद 32 के तहत रिट याचिका को लोकस के आधार पर खारिज कर दिया था । सुप्रीम कोर्ट ने इलाहाबाद हाईकोर्ट के उस फैसले पर स्वत- संज्ञान लिया जिसमें कहा गया था कि स्तन पकड़ना और पायजामा का नाड़ा तोड़ना बलात्कार का प्रयास नहीं माना जाएगा। इलाहाबाद उच्च न्यायालय द्वारा यह निर्णय दिए जाने के कुछ दिनों बाद कि नाबालिग लड़की के स्तनों को पकड़ना, उसके पायजामे का नाड़ा तोड़ना और उसे पुलिया के नीचे खींचने का प्रयास करना बलात्कार या बलात्कार के प्रयास के अपराध के अंतर्गत नहीं आएगा, सर्वोच्च न्यायालय ने इस आदेश पर स्वतः संज्ञान लिया है । यह मामला कल न्यायमूर्ति बी.आर. गवई और न्यायमूर्ति ए.जी. मसीह की पीठ के समक्ष सूचीबद्ध किया जाएगा ।यह संज्ञान वरिष्ठ अधिवक्ता शोभा गुप्ता द्वारा भेजे गए पत्र के आधार पर लिया गया है, जो एनजीओ वी द वूमेन ऑफ इंडिया की संस्थापक भी हैं। अभियोजन पक्ष का कहना है कि आरोपी पवन और आकाश ने 11 वर्षीय पीड़िता के स्तनों को पकड़ा और उनमें से एक आकाश ने उसके पायजामे का नाड़ा तोड़ दिया और उसे पुलिया के नीचे खींचने की कोशिश की। इसे यौन अपराधों से बच्चों के संरक्षण अधिनियम, 2012 के दायरे में बलात्कार के प्रयास या यौन उत्पीड़न के प्रयास का मामला पाते हुए, संबंधित ट्रायल कोर्ट ने POCSO अधिनियम की धारा 18 (अपराध करने का प्रयास) के साथ धारा 376 को लागू किया और इन धाराओं के तहत समन आदेश जारी किया। हालांकि, उच्च न्यायालय ने इसके बजाय निर्देश दिया कि आरोपी पर धारा 354-बी आईपीसी (नंगा करने के इरादे से हमला या आपराधिक बल का प्रयोग) के मामूली आरोप के तहत मुकदमा चलाया जाए, जिसे POCSO अधिनियम की धारा 9/10 (गंभीर यौन उत्पीड़न) के साथ पढ़ा जाए। इस आदेश ने एक बड़ा विवाद खड़ा कर दिया, जिसमें कई लोगों ने इसकी आलोचना की। इस मामले में उच्च न्यायालय ने तैयारी और प्रयास के बीच अंतर बताया।÷आरोपी पवन और आकाश के खिलाफ लगाए गए आरोप और मामले के तथ्य इस मामले में बलात्कार के प्रयास का अपराध नहीं बनाते हैं। बलात्कार के प्रयास का आरोप लगाने के लिए अभियोजन पक्ष को यह स्थापित करना होगा कि यह तैयारी के चरण से आगे निकल गया था। अपराध करने की तैयारी और वास्तविक प्रयास के बीच का अंतर मुख्य रूप से दृढ़ संकल्प की अधिक डिग्री में होता है, न्यायमूर्ति राम मनोहर नारायण मिश्रा की पीठ ने 3 आरोपियों द्वारा दायर आपराधिक पुनरीक्षण याचिका को आंशिक रूप से स्वीकार करते हुए कहा। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि न्यायमूर्ति बेला एम. त्रिवेदी और न्यायमूर्ति पी.बी. वराले की सर्वोच्च न्यायालय की पीठ ने हाल ही में आदेश को चुनौती देने वाली अनुच्छेद 32 के तहत रिट याचिका को लोकस के आधार पर खारिज कर दिया था ।

हण्डिया पुलिस टीम द्वारा डेढ़ करोड़ का 1300 किलो अवैध गांजा पकड़ा गय, एक व्यक्ति गिरफ्तार

स्वतंत्र प्रभात

ब्यूरो प्रयागराज। श्रीमान् पुलिस आयुक्त के निर्देशन में अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में में थाना हण्डिया पुलिस टीम द्वारा अभियुक्त अमित त्रिपाठी उर्फ मुकुन्द पुत्र घनश्याम त्रिपाठी निवासी ग्राम चौरा बड़ेरा धाना हण्डिया कमिश्नरेट प्रयागराज को आज दिनांक-26.03.2025 को थाना हण्डिया क्षेत्रान्तर्गत ग्राम चौरा बड़ेरा मजरा बजहा मिश्रान के पास से 50 बोरियों में कुल 1300 किग्रा) अवैध गांजा (अनुमानित कीमत 1.5 करोड़ रूपये/-), 01 इलेक्ट्रानिक तराजू व घटना में प्रयुक्त 03 चार-पहिया वाहन 1. टाटा एक्स गोल्ड वाहन सं0-UP 70 PT 3582, 2. स्कोडा कार वाहन सं0-LIP 70 HJ 0676 व 3. निशान किक्स कार वाहन सं0-UP 70 FW 0553 के साथ गिरफ्तार किया गया। उक्त गिरफ्तारी बरामदगी के आधार पर थाना हण्डिया पर मु0अ0सं0-163/2025 धारा-18/20 एन0डी0पी0एस0 एक्ट पंजीकृत कर नियमानुसार अग्रिम विधिक कार्यवाही की गयी। पुलिस के अनुसार दिनांक-25.03.2025 को समय करीब 23.30 बजे थाना हण्डिया क्षेत्रान्तर्गत ग्राम चौर बड़ेरा निवासी घनश्याम त्रिपाठी के मकान के पीछे काफी मात्रा में अवैध गांजा मौजूद होने की सूचना प्राप्त हुई। इस सूचना पर प्रभारी निरीक्षक हण्डिया पुलिस टीम के साथ मौके पर पहुंच कर उपरोक्त मकान का घेराब कर लिया तथा सहायक पुलिस आयुक्त हण्डिया को सूचना देकर मौक पर बुलाया गया एवं घटना स्थल क निरीक्षण किया गया। उक्त घटनास्थल से अभियुक्त अमित त्रिपाठी उर्फ मुकुन्द उपरोक्त को गिरफ्तार किया गया त मौके पर खड़े 03 चार-पहिया वाहनों व घर में बने गोदाम से 50 बोरियों में कुल 1300 कि0ग्रा0 अवैध गां (अनुमानित कीमत 1.5 करोड़ रूपये/-) बरामद किया गया। उक्त गिरफ्तारी बरामदगी के आधार पर थाना हण्डिया मु0अ0सं0-163/2025 धारा-18/20 एन0डी0पी0एस0 एक्ट पंजीकृत किया गया। गिरफ्तार अभियुक्त से पूछताछ करने पर बताया गया कि जावेद खान पुत्र नामालूम निवासी कोड़ापुट जन जनपद कोड़ापुट जयपोर उड़ीसा से गांजा लाकर हमें देता है, जिसे मैं अपने परिजनों व सहयोगियों के साथ मिल कर जनपद के विभिन्न क्षेत्रों में चार पहिया वाहनों से गांजा की तस्करी करते हैं तथा गांजा की तस्करी/ब्रिक्री वाले पैसों को आपस में बराबर बांट लेते है।

संक्षिप्त ख़बरें

अतरौरा में समस्याओं को लेकर भारतीय किसान यूनियन (टिकैत)की बैठक 27 को।

ब्यूरो प्रयागराज। भारती किसान यूनियन टिकैट परिवार 27 मार्च को अतरौरा ग्राम सभा में किसान पंचायत लगाई जाएगी। ब्लॉक अध्यक्ष के ओमप्रकाश पटेल ने सभी किसान भाइयों से निवेदन किया है कि गंगा पार के सभी पदाधिकारी एवं मंडल अध्यक्ष, तहसील अध्यक्ष, ब्लॉक अध्यक्ष ग्राम अध्यक्ष सब सुबह 10-00 बजे अतरौरा ग्राम सभा में पहुंचने का कष्ट करें एसीपी हंडिया, थानाध्यक्ष उतराव, बीडीओ सैदाबाद आदि लोग उपस्थित रहेगें। उक्त जानकारी ब्लॉक अध्यक्ष ओमप्रकाश पटेल ने दी है।

अरेल नैनी में मरीज के परिजन के साथ मारपीट में महिला घायल ।अस्पताल के खिलाफ कारवाही मांग।

ब्यूरो प्रयागराज। नैनी मंथन हस्पिटल अरैल मोड़ चाकदोन्दी नगर प्रयागराज में चौबेलाल भारतीया 60 वर्ष निवासी महोरी रीवा करछना प्रयागराज को आई सीओ वेंटिलेटर पर भर्ती किया गया । पिता के हालत को जानकारी लेने के लिये सुशील कुमार भारतीया पी आर डी ने हस्पिटल के डॉक्टर से

बात किये तो बताया गया की अभी आप के पिता के शास चल रही है । उन्होने डॉक्टर से डिस्चार्ज करने के लिए बोले तो हस्पिटल के कर्मचारी द्वारा बोला गया की अभी डॉक्टर नही है आये गे तो डिस्चार्ज किया जाये गा । सुबह से दोपहर 12 बज गए । लेकिन डिस्चार्ज नही किया गया । हस्पिटल के स्टाप और परिजनों में नोक झोंक होने लगी तभी वार्ड ब्याय ने गमला से सुशील देवी भरतीया पत्नी राज करन भारतीया 55 वर्ष निवासी नीबी नरसिंहपुर चकिया नैनी को सर पर वार कर के गम्भीर रूप से घायल कर दिया । जिससे घायल हो कर गीर पड़ी । सुशील कुमार भारतीया द्वारा नैनी कोतवाली थाने में तहरीर दे कर कार्यवाही

इलाहाबाद हाईकोर्ट में आज भी हड़ताल कैट के वकीलों ने भी काम रोका

स्वतंत्र प्रभात

ब्यूरो प्रयागराज। दिल्ली हाईकोर्ट के जस्टिस यशवंत वर्मा के मामले को लेकर इलाहाबाद हाईकोर्ट बार एसोसिएशन की हड़ताल आज बुधवार को दूसरे दिन भी जारी है। हड़ताल के कारण मुकदमों की सुनवाई नहीं हो पा रही है। अनिश्चितकालीन हड़ताल के दूसरे दिन भी हाईकोर्ट में काम काज ठप है। प्रदेशभर से ऐसे फरियादी जिन्हें हड़ताल के बारे में जानकारी नहीं हो पाई थी वो लौट रहे हैं. बार एसोसिएशन के पदाधिकारी हाईकोर्ट के गेट नंबर 3 के बाहर टेंट लगाकर धरना दे रहे हैं और सभा कर रहे हैं. उधर, कैट बार एसोसिएशन ने भी हड़ताल शुरू कर दी है. वहां भी काम काज ठप हो गया है. बार के पदाधिकारी और अधिवक्ता मंच से भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज बुलंद कर रहे हैं और ज्यूडीशरी में इसे कतई बर्दाश्त न करने की बात कह रहे हैं. इलाहाबाद हाईकोर्ट बार एसोसिएशन के अध्यक्ष अनिल तिवारी ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि हमारी मांग

करप्शन फ्री न्यायपालिका की है. इलाहाबाद हाईकोर्ट में न्यायाधीशों की कमी है, इसका कतई यह मतलब नहीं है कि आप हमें कूड़ा करकट दे देंगे. जब तक जस्टिस यशवंत वर्मा को क्लीनचिट न मिल जाए उन्हें दिल्ली हाईकोर्ट ही क्यों नहीं रहने दिया जाता. हमने ईडी और सीबीआई जांच की मांग की है. ये एजेंसियां अगर जस्टिस वर्मा को क्लीनचिट दे देती हैं तो उन्हें इलाहाबाद हाईकोर्ट भेज दिया जाए. हमें कोई आपत्ति नहीं है. अगर बिना जांच के जस्टिस यशवंत वर्मा अगर इलाहाबाद हाईकोर्ट आएंगे तो उनका विरोध होगा. उनकी बेंच का बहिष्कार होगा. सरकार को चाहिए कि वो जस्टिस यशवंत वर्मा का इलाहाबाद हाईकोर्ट ट्रांसफर रद कर दें. उन्हें किसी और स्टेट में भेज दें. बता दें कि सरकारी आवास से नकदी मिलने के बाद जांच का सामना कर रहे दिल्ली हाईकोर्ट के न्यायाधीश यशवंत वर्मा से न्यायिक कार्य वापस लेने के साथ ही साथ उनको इलाहाबाद हाईकोर्ट (मूल न्यायालय) फिर से भेजने का आदेश दिया गया है। इलाहाबाद हाईकोर्ट बार एसोसिएशन ने सुप्रीम कोर्ट कोलेजियम के फैसले के विरोध में अनिश्चितकालीन हड़ताल की घोषणा कर दी है. हड़ताल का आज दूसरा दिन है. बार एसोसिएशन ने सोमवार को बुलाई आपातकालीन आम सभा में 11 बिंदुओं पर प्रस्ताव पास किया था। इसमें जस्टिस यशवंत वर्मा पर महाभियोग चलाए जाने, सीबीआई व ईडी जैसी जांच एजेंसियों से एफआईआर दर्ज कर जांच कराने जैसी मांगें शामिल हैं. उधर, सुप्रीम कोर्ट की तीन सदस्यीय आंतरिक जांच समिति ने जस्टिस यशवंत वर्मा के घर में भारी मात्रा में नकदी मिलने की जांच शुरू कर दी है. सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस संजीव खन्ना के निर्देश पर बनी समिति के सदस्यों में पंजाब और हरियाणा हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस शीलू नागू, हिमाचल प्रदेश हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस जीएस संधावालिया, कर्नाटक हाईकोर्ट के जज जस्टिस अनु शिवरामन मंगलवार को दिल्ली के 30 तुगलक क्रीसेंट स्थित जस्टिस वर्मा के घर पहुंचे. करीब 40 मिनट तक घर के अंदर जांच समिति ने समय बिताया। जांच समिति उस स्टोर में भी गई जहां, 500-500 रुपए के अधजले नोट बोरियों में रखे मिले थे. जस्टिस वर्मा के घर 14 मार्च की रात आग लग गई थी, जिसके बाद अग्निशमन अधिकारियों ने नकदी मिलने का खुलासा किया था. इसके बाद जांच के लिए चीफ जस्टिस ने तीन सदस्य जांच समिति का गठन किया है। हालांकि जस्टिस यशवंत वर्मा ने आरोपों का खंडन करते हुए कहा था कि इस नकदी का उनके परिवार से कोई लेना-देना नहीं है. उनके परिवार का कोई भी सदस्य स्टोर रूम में कभी

30 दिवसीय Student Police E&periential learning(SPEL) कार्यक्रम का शुभारम्भ

स्वतंत्र प्रभात

ब्यूरो प्रयागराज। भारत सरकार के युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय द्वारा संचालित 30 दिवसीय Student Police E&periential learning(SPEL) कार्यक्रम फेज-2 का शुभारम्भ रिजर्व पुलिस लाइन्स कमिश्नरेट प्रयागराज में किया गया जिसमें यूनाइटेड इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट कॉलेज प्रयागराज के छात्र/छात्राओं द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभाग किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में ICCC व P-112, साइबर क्राइम, कानून-व्यवस्था, यातायात व कम्यूनिटी पुलिसिंग इत्यादि विषयों के बारे में छात्र/छात्राओं को आधारभूत जानकारी दी गयी। प्रशिक्षण कार्यक्रम में पुलिस उपायुक्त मुख्यालय, सहायक पुलिस आयुक्त लाइन्स, यूनाइटेड इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट कॉलेज प्रयागराज के कार्यक्रम समन्वयक- सैय्यद कामरून काजमी व थाने स्तर पर नामित नोडल अधिकारी आदि उपस्थित रहे।

शुभारंभ दुकानों का सर्वे करा कर लिखित रूप से प्रशासन के आला अफसर को जानकारी दी जाएगी

आल इंडिया पशु क्रूरता एवं क्रूरता ऑफिस का शुभारंभ

स्वतंत्र प्रभात

ब्यूरो प्रयागराज। पशु तस्करी एवं पशु क्रूरता रोकथाम पशु सुरक्षा एवं पशु संरक्षण के उपस्थिति में प्रयागराज जिला कार्यालय 5 बेली गांव प्रयागराज में शिवकुमार पासवान चेयरमैन उत्तर प्रदेश SPCA ALL INDIA ने बताया कि संस्था पूरे देश में पशु तस्करी एवं पशु क्रूरता रोकने का काम कर रही है और आज प्रयागराज में पुलिस प्रशासन के सहयोग से पशु तस्करी को रोकने का कार्य का अभियान चलाया जाएगा। अभियान की जानकारी लिखित पत्र के माध्यम से सभी आला अफसर को सूचना कर दिया जाएगा और अवैध रूप से छोटे-छोटे बूचड़खाने जो चलाए जा रहे हैं जिसमें मटन की दुकान मुर्गे की दुकान वह अन्य गोश्त की दुकान इन सभी दुकानों का सर्वे करा कर लिखित रूप से प्रशासन के आला अफसर को जानकारी दी जाएगी जो गोश्त की दुकान बिना मानक के चलाए जा रहे हैं। उन दुकानदारों पर प्रशासनिक कार्रवाई पशु

क्रूरता अधिनियम के तहत कराया जाएगा यदि प्रशासन के द्वारा कार्य वाई में हिल वाली होती है तो कोर्ट के जरिए पशु क्रूरता अधिनियम के तहत करवाई सुनिश्चित कराई जाएगी शिवकुमार पासवान चेयरमैन उत्तर प्रदेश ने बताया उत्तर प्रदेश में शासन प्रशासन के सहयोग से पशु तस्करों पर कार्रवाई निरंतर कराई जा रही है और कई पशु तस्करों पर अन्य जिलों में मुकदमा थाना प्रभारी के माध्यम से व उनके सहयोग से पशु क्रूरता के तहत मुकदमा पंजीकृत कराया जा चुका है । इस दौरान उपस्थित रहे ऐडवोकेट अरुण चौधरी लीगल एडवाइजर इलाहाबाद हाई कोर्ट SPCA All INDIA ने कहा एनिमल पर ग्रेविटी करने वाले दुकानदार वह पशु तस्कर पर संवैधानिक तरीके से पशु क्रूरता अधिनियम के तहत शक्ति के साथ कार्रवाई कराई जाएगी,अरुण भारतीय डिस्ट्रिक्ट कोऑर्डिनेटर प्रयागराज स्क्ष्ट्र द्यद्य ढ्ढह्रष्ठ्ठ ने बताया मैं अपने पशु रक्षों के साथ मिलकर लगभग 2 वर्षों से नित्य दिन पशु तस्कर पशु क्रुएलिटी करने वालों पर प्रशासनिक कार्रवाई कर रहा हूं जिसमें हमें पुलिस प्रशासन का भरपूर सहयोग मिला और प्रशासन के सहयोग से आगे भी मैं पशु तस्करी एवं पशु क्रूरता करने वालों पर संवैधानिक तौर पर कार्रवाई करता रहूंगा , मुख्य रूप से और टीम के पशु रक्षक, अनिल यादव, राजकुमार सोनकर, करन सोनकर, प्रमोद सोनकर, ईशु यादव, सुभाष निर्मल, आर्यन चौधरी,अनुराग, सोनू एवं SI SPCA ALL INDIA उपस्थित रहे।

किसानों ने दिया लोक निर्माण विभाग कार्यालय पर धरना

मथुरा। भारतीय किसान यूनियन भानु कार्यकर्ताओं ने राष्ट्रीय प्रवक्ता हरेश ठैनुआ, जिलाध्यक्ष देवेन्द्र पहलवान, प्रदेश अध्यक्ष पहलवान प्रकोष्ठ भूरा पहलवान के नेतृत्व में कृष्णापुरी चौराहे पर स्थित लोक निर्माण विभाग कार्यालय का यमुना एक्सप्रेस वे से वृंदावन को जोड़ने वाले फ़ोर लेन मार्ग पर डिवाइडर और नाली निर्माण की मांग को लेकर कार्यालय पर धरना दिया। जिसके बाद किसान संगठन के नेताओं ने डिवाइडर बनाए जाने की मांग अधिकारियों के सामने रखी। जहां अधिशासी अभियन्ता गुलवीर सिंह को फ़ोर लेन मार्ग पर डिवाइडर के निर्माण को लेकर अवगत कराया। जिस पर अधिशासी अभियन्ता गुलवीर सिंह ने एक हफ्ते में समस्या का समाधान करने का आश्वासन दिया। तब जाकर किसान शांत हुए। वहीं कार्यालय का घेराव करने में जगदीश रावत राष्ट्रीय सचिव, गिर्राज सिंह, भूरा पहलवान प्रदेश अध्यक्ष प्रकोष्ठ, लक्ष्मीनारायण जिला महासचिव, विक्रम सिंह चौधरी, सुरेन्द्र चौधरी कार्यकर्ता, कुशलपाल चौधरी, अमरसिंह, भूरा चौधरी, मानसिंह चौधरी, रामबीर सिंह, जितेन्द्र चौधरी, राजकुमार राणा, महेंद्र सिंह, राकेश चौधरी, विष्णु चौधरी, आदि आक्रोशित कार्यकर्ता शामिल रहे।

'गजवा -ए- हिन्द 'बनाम 'सौगात -ए - मोदी '

आज मै खुले दिल से भाजपा के दुस्साहस को सलाम करता हूँ । आप कहेंगे कि सलाम क्यों,प्रणाम क्यों नहीं ? तो भाई केवल भाषा का फर्क है,भाव का नहीं। भाजपा एक तरफ हाल के अनेक चुनावों में देश के मुसलमानों को मंगलसूत्रों का लुटेरा कह चुकी है। उनके खिलाफ 'बंटोगे तो कटोगे 'का नारा लगा चुकी है । मुसलमानों के खिलाफ आधे हिंदुस्तान में भारतीय न्याय संहिता के बजाय 'बुलडोजर संहिता 'का खुले आम इस्तेमाल कर चुकी है, बावजूद इसके आने वाली ईद पर भाजपा मुसलमानों के बीच ' सौगात-ए-मोदी ' लेकर पहुँचने वाली है।ये सौगात मसलमानों के 'गजवा ए हिन्द 'कि मुकाबले में है। ईद पर 32 लाख गरीब मुसलमानों को 'सौगात-ए-मोदी 'किट में सेवइयां, खजूर, ड्राई फ्रूट्स, बेसन, घी-डालडा और महिलाओं के लिए सूट के कपड़े होंगे। सब जानते हैं कि भाजपा और आरएसएस मुसलमान विहीन,कांग्रेस विहीन भारत चाहते हैं, लेकिन वे सारा कस-बल लगाकर भी इस लक्ष्य को हासिल नहीं कर पाए। इन दोनों संस्थाओं ने जिन्दा मुसलमानों के साथ ही मर चुके औरंगजेब की कब्र तक पर हमले कर लिए लेकिन बात बनी नही। संघ के इंद्रेश कुमार मुस्लिम राष्ट्रिय मंच बनाकर भी देश के मुसलमानों को भाजपा के पक्ष में नहीं कर पाए किन्तु भाजपा ने हार नहीं मानी। भाजपा मुसलमानों को संसद में 'कटुआ 'कहने के बाद भी सोचती है कि गरीब मुसलमान सेवइयां, खजूर, ड्राई फ्रूट्स, बेसन, घी-डालडा और महिलाओं के लिए सूट के कपड़े के लालच में आकर भाजपा का वोट बैंक बन जाएगा। उस भाजपा के साथ खड़ा हो जायेगा जो मुसलमानों को न संसद में जाने दे रही है और न विधानसभाओं में।

भाजपा के दुस्साहस से देश की दीगर सियासी पार्टियों क सीखना चाहिए। भाजपा ने आज 25 मार्च से मोदी की सौगत वाली किट बाँटने का आगाज कर दिया है। भाजपा का कहना है कि यह योजना न केवल सहायता प्रदान करेगी, बल्कि मुस्लिम समुदाय को 'चंद दलालों और ठेकेदारों' के प्रभाव से बाहर निकालने में भी मदद करेगी।इसकी शुरुआत नई दिल्ली के गालिब अकादमी से हो रही है . इसके तहत हर एक भाजपा कार्यकर्ता 100 लोगों से संपर्क करेगा. भाजपा का दावा है कि यह कदम सामाजिक समावेश और गरीबी उन्मूलन की दिशा में एक बड़ा प्रयास है. इस पहल को बिहार सहित कई राज्यों में लागू किया जाएगा, जहां भाजपा की मजबूत उपस्थिति है।

सौगात ए मोदी अभियान भारतीय जनता पार्टी द्वारा शुरू किया गया एक अभियान है। इसका उद्देश्य है मुस्लिम समुदाय के बीच कल्याणकारी योजनाओं को बढ़ावा देना और भाजपा और एनडीए के लिए राजनीतिक समर्थन जुटाना है। यह अभियान खास इसलिए भी है क्योंकि यह रमजान और ईद जैसे अवसरों पर केंद्रित है। भाजपा जहाँ एक और सम्भल और ज्ञानवापी जैसी मस्जिदों को खोदने पर आमादा हैवहीं दूसरी और भाजपा ने 3 हजार मस्जिदों के साथ सहयोग करने की योजना बनाई है। आप इसे केंद्र सरकार का समावेशी निर्णय भी कह सकते हैं और राजनीति का हिस्सा हिस्सा भी कह सकते हैं हैं।

दुनिया और भारत का मुसलमान जानता है कि भाजपा और भाजपा के प्रचारक से प्रधानमंत्री बने मोदी जी मुसलमानों की टोपी से चिढ़ते है। प्रधानमंत्री आवास पर होने वाली इफ्तार पार्टियों को वे बंद करा चुके हैं ,लेकिन अचानक बिहार जीतने के लिए अब भाजपा और संघ दोनों ने अपना रंग बदल लिया है। बिहार में अचानक पटना में अलग-अलग राजनैतिक दलों द्वारा इफ्तार का आयोजन किया गया । भाजपा के सहयोगी चिराग पासवान द्वारा भी इफ्तार पार्टी का आयोजन किया गया ,लेकिन कई मुस्लिम नेताओं ने इससे दूरी बना रखी। चिराग पासवान कहते घूम रहे हैं कि केंद्र सरकार मुसलमानों के लिए लगातार काम कर रही है लेकिन उस हिसाब से मुस्लिम समुदाय के लोगों का वोट

एनडीए को नहीं मिल रहा है। साथ ही उन्होंने कहा कि मुसलमानों का इस्तेमाल केवल वोट बैंक की तरह किया गया है।

सौगात-ए-मोदी पर प्रतिक्रियाएं आने लगीं हैं। कोई इसे मुसलमानों के साथ छल बता रहा है तो कोई इसे चुनावी दांव बता रहा है. अखिलेश यादव समेत विपक्ष के कई नेता भाजपा की इस योजना पर बिफरे हुए हैं. तृमूकां सांसद शत्रुघ्न सिन्हा ने तो इस योजना को मुसलमानों के साथ मजाक बताया है। बीजेपी ने सौगात-ए-मोदी की शुरुआत दिल्ली से की है, मगर इसकी सबसे ज्यादा चर्चा बिहार में है। क्योंकि बिहार में इसी साल विधानसभा के चुनाव होने हैं। विपक्ष आरोप लगा रहा है कि मुस्लिम मतदाताओं को लुभाने के लिए भाजपा ने ये दांव चला है। हालांकि, विपक्ष के नेता ये भी कहते हैं कि ऐसी सौगातों से भाजपा को बिहार में कोई फायदा नहीं मिलने वाला. जबकि भाजपा का कहना है कि गरीब अल्पसंख्यक भी खुशी से अपना पर्व मनाएं इस लिए ये योजना चलाई गई है। आप भाजपा से और अपने आपसे सवाल कर सकते हैं कि भाजपा को अचानक गरीब मुसलमानों की चिंता क्यों सताने लगी ? भाजपा मुसलमानों को आतंकित कर देख चुकी है लेकिन उसे लगता है कि बात अभी बनी नहीं है इसलिए अब मुसलमानों की गरीबी का लाभ उठाने के लिए उन्हें मोदी जी की और से सौगात बांटी जा रही है। ये सौगात मोदी जी के वेतन से नहीं जा रही । भाजपा के चंदे से जुटाए करोड़ों रुपयों से नहीं दी जा रही । ये सौगात सरकारी पैसे से दी जा रही है। उस सरकारी पैसे से जो देश के आम करदाताओं का पैसा है। यानि ये सौगात भी एक तरह का फ्रीबीज है। जिस देश में 80 करोड़ से ज्यादा लोग दो वक्त की रोटी के लिए सरकार के मोहताज हैं उस मुल्क में 32 लाख गरीब मुसलमानों को रिझाना कोई कठिन काम नहीं है।

भाजपा का ये कदम हालाँकि साफतौर पर सियासी है लेकिन मैं इसकी कामयाबी की कामना करता हूँ। कम से कम गरीब मुसलमानों को कुछ तो मिलेगा। किन्तु मुझे इस बात पर संदेह बह है कि मुल्क का गरीब मुसलमान ईद जैसे पाक त्यौहार पर कोई सियासी सौगात कबूल कर अपने ईमान ,इकबाल का सौदा करेगा ? इस देश के मुसलमानों के मन में भाजपा को लेकर जो संदेह हैं वे मोदी जी की छह सौ रुपल्ली की सौगात से दूर होने वाले नहीं हैं। फिर भी कोशिश तो एक आशा जैसी है ही। कांग्रेस समेत दूसरे तमाम दलों के पास मोदी की इस सौगात के जबाब में कोई और महंगी सौगात है क्या ? भारत में मुस्लिम आबादी अभी 20 करोड़ है । जाहिर है की भाजपा ने मोदी जी की सौगात पूरे देश के मुसलमानों के लिए तैयार नहीं की है। ये सिर्फ 32 लाख मुसलमानन के लिए है जो बिहार में रहते हैं।

राकेश अचल

रेल विकास- एक पहलू यह भी

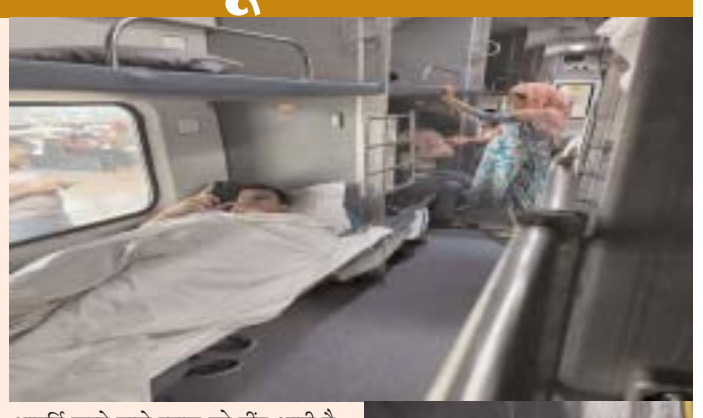

भारतीय रेल विकास के नित्य नये अध्याय लिख रहा है। अनेक तीव्रगामी ट्रेन संचालित की जा रही हैं। मुंबई-अहमदाबाद के मध्य तो हाई स्पीड रेल/ बुलेट ट्रेन चलने की योजना है। दिसंबर 2023 तक बुलेट ट्रेन संचालन की तैयारी को पूरा करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया था। परन्तु अभी तक इसका निर्माण कार्य पूरा नहीं हो सका है। इसकी अधिकतम गति 320-350 किमी प्रति घंटे की बताई जा रही है। इससे भी आगे बढ़कर 1300 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से हाइपर लूप चलाने का भी प्रस्ताव है। अनेक वनदे भारत सेमी हाई स्पीड ट्रेन चल चुकी हैं। इसके अतिरिक्त नमो भारत रैपिड रेल जिसे पहले वंदे भारत मेट्रो के नाम से जाना जाता था वह भी अहमदाबाद और भुज के बीच पहले से ही चल रही थी,अब दिल्ली, ग़ाज़ियाबाद व मेरठ के बीच लगभग 180 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से चल रही है। इसी तरह अनेक रेलवे स्टेशन का नवीनीकरण किया जा रहा है। अनेक प्रमुख रेल स्टेशन पर एस्केलेटर / स्वचालित सीढ़ियां लगाई गयी हैं। अनेक रेल स्टेशन पर एक प्लेटफार्म से दूसरे पर जाने के लिये लिफ़्ट लगाई गयी हैं। भीड़ भाड़ वाले स्टेशन पर नए प्लेटफ़ॉर्म बनाये गए हैं। उधर रेल परिवहन क्षेत्र में भी बड़ी क्रांति हुई है जिसके तहत भारत के समर्पित मालवाहक गलियारे (डीएफसी) पर विशेष रेलवे ट्रैक निर्मित किये गए हैं। यह ट्रैक केवल माल परिवहन के लिए डिज़ाइन किये गए हैं जिनका मक़सद माल ढुलाई की क्षमता और गति को बढ़ाना,माल परिवहन की दक्षता और गति में सुधार करना, मौजूदा रेल नेटवर्क पर ट्रेन की संख्या को कम करना और आर्थिक विकास को बढ़ावा देना है।

परन्तु इन सब के बावजूद रेल यात्रियों की सुविधा,सुरक्षा व स्वास्थ्य आदि से जुड़े अनेक बुनियादी सवाल अभी भी उसी तरह बरक़रार हैं। सरकार भले ही वंदे भारत,राजधानी व शताब्दी जैसी ट्रेनों के संचालन पर इतराती हो परन्तु हक़ीक़त तो यह है कि देश की अधिकांश आम जनता इनके अतिरिक्त चलने वाली दूसरी लगभग तीन हज़ार सामान्य मेल एक्सप्रेस ट्रेन्स से ही यात्रा करती है। और इन ट्रेन्स में यात्रियों को अनेक प्रकार की परेशानियों का सामना करना पड़ता है। सबसे बड़ी समस्या तो बर्थ व सीट की उपलब्धता की ही है। लंबी दूरी की गाड़ियों में सामान्य कोच की स्थिति किसी से छुपी नहीं है। न केवल यात्री लटक कर या दरवाज़ों पर खड़े होकर यात्रा करते हैं बल्कि कभी कभी तो यह यात्री शौचालय में घुसकर उसे भीतर से बंद कर अपनी यात्रा पूरी करते हैं। जिससे ट्रेन के अन्य यात्रियों को भी परेशानी होती है। और जब यही भीड़ अनियंत्रित होती ही तो स्लीपर क्लास से लेकर ए सी कोच तक में अनिधकृत रूप से घुस जाती है। ज़्यादा भीड़ देखकर टिकट निरीक्षक भी उन्हें उतारने के बजाये यात्रियों से %सुविधा शुल्क% लेकर उनकी अवैध यात्रा की अनदेखी कर देते हैं। परिणामस्वरूप आरक्षित यात्रियों व उनके सामन की सुरक्षा तो ख़तरे में पड़ती ही है साथ ही उन्हें वाशरूम तक पहुँचने व उसे इस्तेमाल करने में भी परेशानी होती है।

दिल्ली,पंजाब,महाराष्ट्र व दक्षिणी राज्यों से बिहार बंगाल की तरफ़ जाने वाली गाड़ियों में ए सी श्रेणी में उपलब्ध कराये जाने वाले कंबल व चादरों की तो दशा ही मत पूछिए। बहुत सौभाग्यशाली होता होगा वह यात्री जिसे धुली हुई चादर नसीब हो जाती हो। अन्यथा पूर्व के यात्रियों द्वारा प्रयुक्त चादरें ही तह कर और वेंडर के ख़ाकी लिफ़ाफ़े में पैक कर उसपर टेप लगाकर पुनः दूसरे यात्रयों को दे दी जाती हैं । और कंबल का तो हाल ही मत पूछिए। यह बदबूदार गंदे कंबल तो शायद कभी धोये ही नहीं जाते। देर रात जब बेडिंग आपूर्ति करने वाले स्टाफ़ को नींद आती है तो यही चादरें और कंबल जो बाद में यात्रियों को भी दिए जाने हैं उन्हें गंदी फ़र्श पर बिछा कर सो जाते हैं। और सोने में सुहागा यह की उन्हीं कोनों में लोगों ने पान खाकर भी थूका होता है जहाँ वे चादर कंबल बिछा कर सो रहे होते हैं। निश्चित रूप से इस तरह के कंबलों व चादरों का यात्रियों को आवंटित किया जाना यात्रियों के आराम व सुविधा देने से अधिक बीमारियों व संक्रमण को न्यौता ज़रूर देता है। रेल मंत्रालय को इस दुर्व्यवस्था से सख़्ती से निपटने की ज़रुरत है।

मेल एक्सप्रैस ट्रेन्स में प्रायः हिजड़ों व महिलाओं के गैंग यहां तक कि सजी धजी सुन्दर लड़कियों के गिरोह सक्रिय रहते हैं। यह यात्रियों से पैसों की उगाही करते हैं। यदि कोई यात्री पैसे नहीं देता तो यह उन्हें अपमानित करने में भी नहीं हिचकिचाते। यदि कोई इज़्ज़तदार व्यक्ति किसी मजबूरीवश निर्धारित टिकट लेकर ट्रेन यात्रा न कर सके या बेटिकट हो अथवा सामान्य टिकट लेकर जल्दबाज़ी में ए सी कोच में सवार हो जाये तो टिकट निरीक्षक उससे तो बड़े अपराधी की तरह पेश आता है। परन्तु यदि इसतरह के भिखारी हिजड़े या औरतें ट्रेन में मांगते फिरें और यात्रियों के सामन की सुरक्षा के लिये चिंता पैदा करें तो यही टिकट निरीक्षक ऐसे पेशेवर लोगों को कुछ नहीं कहता। गोया इन्हें रेल विभाग की तरफ़ से ट्रेन में फ़री यात्रा करने व यात्रियों से पैसे ऐंठने का लाइसेंस हासिल हो ?

और दूसरी महत्वपूर्ण समस्या खानपान की स्तरीय आपूर्ति की है। चाहे वह चलती गाड़ी के कोच में यात्रियों को उपलब्ध कराया जाने वाला चाय,नाश्ता खाना हो या फिर रेलवे प्लेटफ़ॉर्म पर बिकने वाली खाने पीने की वस्तुयें किसी का भी कोई स्टैण्डर्ड नहीं है। कभी भी आपको कोई यात्री ऐसा नहीं मिलेगा जो रेल में आपूर्ति की जाने वाली चाय पान खाना आदि की तारीफ़ करता नज़र आ जाये। परन्तु लंबे सफ़र में मजबूर भूखा प्यासा यात्री बार बार ऐसी अवांछित वस्तुओं को ख़रीदने के लिये मजबूर रहता है। ऐसे भी कई वीडीओ वायरल हो चुकी हैं जिनमें इसतरह के खाद्य वस्तुओं के तैयार होने की हक़ीक़त दिखाई जा चुकी है। यानी आपूर्तिकर्ता या ठेकेदार को पैसे कमाने के सिवा यात्रियों के स्वास्थ्य या स्वाद की कोई फ़िक्र नहीं रहती। ज़रा सोचिये कि जब मुझ जैसा आम यात्री रेल के इन कुप्रबन्धनों से भली भांति वाक़िफ़ है तो क्या वह रेल विभाग इन बातों को जानता नहीं होगा ? इसलिये यह कहने में कोई हर्ज नहीं कि यह सब रेल विभाग के अधिकारियों व कर्मचारियों की मिलीभगत का ही परिणाम है। रेल स्टेशन का नवीनीकरण कर या उन्हें भगवा रंग से रंग देने से यात्रियों को बुनियादी परेशानियों से निजात नहीं मिलने वाली। रेल यात्रियों को सर्वप्रथम टिकट के बदले सीट, अवांछित लोगों से उसकी सुरक्षा, सफ़ाई, स्वच्छ व स्वस्थ खानपान जैसी चीज़ें चाहिये। रेल विकास का ढोल पीटने वालों को रेल यात्रियों की परेशानियों से जुड़े इन पहलुओं पर भी ग़ौर करना चाहिये तथा इनका यथाशीघ्र समुचित समाधान भी किया जाना चाहिये।

निर्मल रानी

संपादकीय

कड़वे और मीठे बोलों का खेल

शब्द और लेखनीं के अद्भुत परिणाम।

शब्दों की महिमा को अपरंपार और अक्षर को नश्वर बताया गया है ।वैसे तो लेखनी की तीव्रता तलवार से ज्यादा नुकीली और भाले से ज्यादा चुभने वाली होती है। तलवार की धार से मनुष्य एक बार बच भी सकता है पर लेखनी से लिखे गए शब्द व्यक्ति को मृत्यु सा मूर्छित कर देते है। इसीलिए चिंतकों ने कहा है बोलने से पहले और लिखने से पहले कई बार सोचें और बोलने के बाद सोचने वाला व्यक्ति समाज में मूर्खों की श्रेणी में गिना जाता है। राजनीति और कूटनीति में सारी जद्दोजहद शब्दावली और भाषणों की होती है कूटनीति में एक शब्द के कई अर्थ निकाले जाते हैं और उससे अपना हित अहित साधा जाता है।

मुंह से बोले गए शब्द और वाक्य बहुत सकारात्मक भी हो सकते हैं और बड़े ही भयंकर नकारात्मक भी हो सकते हैं। एक ही शब्द कहीं पर बड़े से बड़ा दंगा करवा सकते हैं और कहीं पर बोले गए प्यार के शब्द बड़े-बड़े विवादों में सुलह करा सकते हैं। शब्द की परिणति उसकी मुक्ति ही करती है। बड़े-बड़े राजनेता अभिनेता अपने मुंह से बोले गए शब्दों से लोकप्रियता के चरम पर पहुंच जाते हैं और कहीं किसी नेता के मुंह से निकला हुआ शब्द बाण समाज में विषाद और जहर भर देता है। शब्दों के जादूगर बड़ी-बड़ी आम सभाओं में सोच समझकर इस्तेमाल कर अपना सार्थक प्रभाव छोड़ते सत्ता परिवर्तन भी शब्दों के माया जाल से हि होता है। अंग्रेजी साहित्य में अरनेस्ट हेमिंग्वे को शब्दों का जादूगर माना जाता था उनके शब्दों का प्रभाव सीधे पाठकों के दिल तक पहुंच जाता था इसी तरह हिंदी में तुलसीदास विश्वव्यापी कवि है उनकी वाणी में सत्य और अमृत है। आधुनिक हिंदी साहित्य मेंअज्ञेय जी को इसी श्रेणी में रखा जा सकता है उनकी शब्दावली कठिन होते हुए भी पढ़ने वालों के मर्म तक पहुंच जाती है। महान कथाकार मुंशी प्रेमचंद हिंदी और देवनागरी लिपि को आत्मसात कर उपन्यास तथा कहानी और लिख कर अमृत्व को प्राप्त किया है। देवकीनंदन खत्री जी ने भी उपन्यासों खाकर चंद्रकांता संतति, भूतनाथ पढ़ने के लिए हिंदी को सीखा और मनन किया और लोकप्रिय उपन्यास की उत्पत्ति की, कबीर अपने फक्कड़पन की भाषा के कारण उत्तर भारत के सभी दिलों में समाए हुए हैं। निसंदेह शब्द जीवंतता प्रदान करते हैं और जीवनशैली को बेहतर बनाने की ओर अग्रसर करते हैं और द्रौपदी द्वारा कहे गए शब्द महाभारत की उत्पत्ति का कारण बनते हैं। इसलिए सदैव कहा जाता है की संभलकर बोलने से सद्गति प्राप्त होती है।

इसीलिए तो संभल कर सही और उपयुक्त शब्दों का इस्तेमाल करना चाहिए। जो सदैव अच्छा वक्ता होता है अपने विचारों को संभल कर बोलता है भले ही वह दिलों को ना छुए पर उसका जनमानस को जीतना तय होता है और संसार पर वही राज करता है जो अपने शब्दों का सही इस्तेमाल करता है, गलत शब्द से, गलत संभाषण से गलत विचारों से बोला गया वाक्य प्रलय भी ला सकता है। शब्दों को तौल कर विचार कर बोलना चाहिए अन्यथा उसके नतीजे भयानक भी हो सकते हैं। शब्दों की मार बहुत ही तेज और बहुत मीठी भी होती है एक शब्द महायुद्ध करवा सकता है और दूसरा शब्द ऐसी शीतल फुहाँरें छोड़ता है कि सारा युद्ध उन्माद अखंड शांति में बदल जाता है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अमेरिका रूस ,जापान, यूरोपीय देशों में दिए वहां के राष्ट्रपति व राजनेताओं द्वारा दिए गए भाषणों संभाषणों से युद्ध और कई बार शांति स्थापित हुई है। पाकिस्तान के राष्ट्रपति प्रधानमंत्री तथा उनके कैबिनेट के मंत्री अपने दिए गए वक्तव्य से ही सारी दुनिया से अलग अलग हो गए हैं। और भड़काऊ भाषण के कारण आज दुर्गति को प्राप्त हुए हैं। भारत शांति का दूत माना जाता है शांति स्थापना की सदैव मीठी वाणी बोलता आया है और यही कारण है कि भारत को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शांति का पुजारी एवं दूत कहा जाता है एवं सदैव अंतर्राष्ट्रीय विवादों में उनके राजनेताओं को मध्यस्थता अथवा समझौते के लिए आमंत्रित किया जाता रहा है। यही कारण है कि रूस यूक्रेन के लंबे युद्ध में विश्व के पूरे देश एवं रूस तथा यूक्रेन के राजनेता भी भारत की ओर युद्ध की शांति की पहल की प्रतीक्षा कर रहे हैं। यही कारण है की युवा पीढ़ी को सदैव कम बोलने, सदाचारी संभाषण देने के लिए प्रेरित किया जाता रहा है भारत की सांस्कृतिक तथा साहित्यिक विरासत को सत साहित्य और संतुलित भाषा का मनुष्य तथा समाज के विकास के लिए पर्याय माना गया है। इसीलिए संतुलित भाषा मीठी भाषा बोलने से सदैव समाज तथा देश का वातावरण विकास के अनुकूल होता आया है।

संजीव ठाकुर

सभ्यता की यात्रा- पाषाण युग से पाषाणहृदय तक

मनुष्य की असभ्यता से सभ्यता की ओर की यात्रा एक अनंत कथा है, जो न कभी पूर्ण होती है, न कभी अपने अंतिम पड़ाव पर ठहरती है। यह एक ऐसी गाथा है, जो समय के साथ अपने रंग बदलती है, कभी उजाले की ओर बढ़ती है तो कभी अंधेरे की गहराइयों में खो जाती है। हम उस देश के वासी हैं, जहां सभ्यता ने सबसे पहले अपनी नींव रखी, जहां मानव ने जंगलीपन को त्याग कर संस्कारों का आलिंगन किया। यह वही धरती है, जहां मंत्रों की गूंज ने पहली बार प्रकृति को सानंद से भर दिया, जहां नदियों के किनारे ज्ञान के दीप जले और जहां प्रेम, त्याग और धर्म की ऐसी कथाएं रची गई, जो आज भी हमारे हृदय को स्पंदित करती हैं। परंतु आज उसी पवित्र भूमि पर मानव पुनः असभ्यता के उस गर्त की ओर बढ़ रहा है, जहां न संस्कारों का मूल्य है, न प्रेम की गरिमा और न ही जीवन की पवित्रता का सम्मान।

मद्र देश के राजा अश्वपति की पुत्री सावित्री की कहानी याद कीजिए। वह राजकुमारी, जिसके सामने सारा वैभव और राजसी ठाठ-बाट बिछा था, उसने अपने जीवन का सबसे बड़ा निर्णय तब लिया, जब उसकी नजर एक साधारण-से दिखने वाले लकड़हारे पर पड़ी और उसने मन ही मन उसका वरण कर लिया। जब अश्वपति ने अपनी पुत्री के इस चयन पर ज्योतिषी से परामर्श लिया, तो ज्योतिषी ने अपनी गणना से एक कठोर सत्य उद्घाटित किया। उसने कहा, "यह युवक कोई साधारण मनुष्य नहीं अपितु एक राजकुमार है, जिसके पिता अश्वपति ने अपना राज्य खो दिया था और जो अब जंगल में निर्वासित जीवन जी रहे हैं। परंतु उसकी आयु अब अधिक नहीं बची। ठीक एक वर्ष बाद वह मृत्यु के आगोश में चला जाएगा।" यह सुनकर अश्वपति का हृदय कांप उठा। उसने अपनी पुत्री को समझाने का हर संभव प्रयास किया, उसे इस विवाह से रोकने की चेष्टा की, परंतु सावित्री का उत्तर अडिग था। उसने कहा, "पिताजी, मैंने मन ही मन उनका वरण कर लिया है। मैं उस धरती की बेटी हूं, जहां स्त्री एक बार विश्वास करती है, एक बार प्रेम करती है और एक बार अपने जीवन का संकल्प लेती है। यदि उनके प्राणों का समय एक वर्ष है, तो वह अब मेरा भाग्य है। मैं इसे स्वीकार करती हूं।"

सावित्री का यह संकल्प केवल शब्दों तक सीमित नहीं रहा। उसने अपने तप, अपनी बुद्धिमता और अपने अटूट प्रेम से यमराज तक को झुका दिया। जिस दिन सत्यवान की मृत्यु का समय आया, सावित्री उनके पीछे-पीछे यम के लोक तक पहुंच गई। उसने न केवल अपने पति के प्राणों को वापस लिया, बल्कि इस धरती पर प्रेम और समर्पण की एक ऐसी मिसाल कायम की, जो युगों-युगों तक गूंजती रहेगी। यह थी उस सभ्यता की शक्ति, जो इस देश की आत्मा में बसी थी। यह थी वह संस्कृति, जिसने नारी को केवल एक देह नहीं, बल्कि एक शक्ति, एक संकल्प और एक सृजन का प्रतीक माना।

परंतु आज वही धरती, वही संस्कारों की भूमि एक ऐसी घटना की साक्षी बन रही है, जो मानवता को शर्मसार कर देती है। मेरठ की एक घटना ने न केवल इस देश के लोगों को झकझोर दिया, बल्कि यह प्रश्न उठा दिया कि क्या हम वास्तव में सभ्यता की ओर बढ़ रहे हैं, या फिर असभ्यता के उस अंधेरे कुएं में गिरते जा रहे हैं, जहां से निकलने का कोई मार्ग शेष नहीं? यह कहानी है सौरभ और मुस्कान की, एक प्रेम विवाह की, जो कभी स्नेह और विश्वास से शुरू हुआ था, परंतु अंत में रक्त, विश्वासघात और क्रूरता की परछाई में डूब गया।

सौरभ और मुस्कान का विवाह एक प्रेम विवाह था। सौरभ के परिवार ने इस रिश्ते को कभी स्वीकार नहीं किया। उनके लिए यह विवाह एक विद्रोह था, एक ऐसा निर्णय जो उनकी परंपराओं और मान्यताओं के खिलाफ था। परंतु सौरभ और मुस्कान ने अपने प्रेम को चुना। उन्होंने शहर में एक किराए का कमरा लिया और अपने छोटे से संसार को बसाया। समय बीता, और इस प्रेम का एक फल भी उन्हें मिला–एक नन्ही बेटी, जो उनके जीवन में खुशियों का प्रकाश लेकर आई। सौरभ मर्चेंट नेवी में कार्यरत था। उसकी नौकरी उसे छह-छह महीने घर से दूर रखती थी। वह समुद्र की लहरों के बीच अपने परिवार के लिए मेहनत करता था, यह सोचकर कि उसकी अनुपस्थिति में उसका घर, उसकी पत्नी और उसकी बेटी सुरक्षित हैं।

परंतु सौरभ की अनुपस्थिति में मुस्कान का जीवन एक अलग राह पर चल पड़ा। उसकी मुलाकात साहिल से हुई, और धीरे-धीरे यह मुलाकात एक संबंध में बदल गई। यह संबंध केवल भावनाओं तक सीमित नहीं रहा। मुस्कान नशे की आदी हो गई, और उसका जीवन उस संयम और संस्कार से दूर होता चला गया, जिसकी नींव पर कभी उसका विवाह खड़ा हुआ था। साहिल के साथ उसकी निकटता बढ़ती गई और सौरभ की अनुपस्थिति अब उसके लिए एक अवसर बन गई। यह अवसर केवल विश्वासघात तक सीमित नहीं रहा, बल्कि एक ऐसी साजिश में बदल गया, जिसने मानवता के सारे बंधनों को तोड़ दिया।

एक दिन, जब सौरभ अपनी ड्यूटी से लौटा, तो उसका स्वागत न तो मुस्कान के प्रेम से हुआ, न ही उसकी बेटी की मुस्कान से। उसके घर में जो हुआ, वह किसी दुःस्वप्न से कम नहीं था। मुस्कान और साहिल ने मिलकर सौरभ की हत्या कर दी। यह हत्या केवल एक क्षणिक क्रोध का परिणाम नहीं थी। यह एक सोची-समझी क्रूरता थी, जो अपने चरम पर पहुंची जब उन्होंने सौरभ के शरीर को छोटे-छोटे टुकड़ों में काट दिया। इन टुकड़ों को एक ड्रम में बंद कर दिया गया, जैसे वह कोई निर्जन वस्तु हो, न कि वह पुरुष जिसने कभी मुस्कान को अपना जीवनसाथी चुना था। इसके बाद मुस्कान और साहिल ने मकान को ताला लगाया और हिमाचल की वादियों में घूमने निकल पड़े। पंद्रह दिनों तक वे वहां मौज-मस्ती करते रहे, मानो कुछ हुआ ही न हो, मानो सौरभ का अस्तित्व ही उनके जीवन से मिट गया हो।

जब यह घटना प्रकाश में आई, तो मेरठ ही नहीं, पूरे देश में हाहाकार मच गया। लोग यह समझ नहीं पा रहे थे कि जिस प्रेम ने कभी दो लोगों को जोड़ा, वह इतनी क्रूरता में कैसे बदल गया। सौरभ की बेटी, जो अभी जीवन के उस पड़ाव पर भी नहीं पहुंची थी जहां वह अपने पिता की अनुपस्थिति को समझ सके, अब अनाथ हो गई। मुस्कान, जो कभी उसकी मां थी, अब उसकी दुनिया की सबसे बड़ी शत्रु बन चुकी थी। यह घटना केवल एक अपराध की कहानी नहीं थी। यह उस सभ्यता के पतन की कहानी थी, जिसे हमने सहस्राब्दियों तक संजोया था।सावित्री और मुस्कान–दो नारियां, दो युग, दो कहानियां। एक ओर सावित्री, जिसने अपने पति के प्राणों को यमराज से छीन लिया, और दूसरी ओर मुस्कान, जिसने अपने पति के प्राणों को छीनकर उन्हें एक ड्रम में कैद कर दिया। यह अंतर केवल व्यक्तियों का नहीं, बल्कि उस संस्कृति और उन मूल्यों का है, जो कभी इस धरती की पहचान थे। क्या हम सचमुच सभ्यता की ओर बढ़ रहे हैं, या यह केवल एक भ्रम है, जो हमें उस असभ्यता की ओर ले जा रहा है, जहां प्रेम, विश्वास और मानवता का कोई स्थान नहीं? यह प्रश्न आज हम सबके सामने है, और इसका उत्तर शायद समय ही दे सकेगा। परंतु यह निश्चित है कि यदि हमने अपनी जड़ों को नहीं संभाला, तो यह धरती, जो कभी सभ्यता की जननी थी, एक दिन असभ्यता की कब्र बनकर रह जाएगी।

बलदेव राज भारतीय

मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक रवि कुमार अवस्थी द्वारा सुशीला स्टेडी बेल एकेडमी 117-मोहल्ला विजय लक्ष्मी नगर परगना खैराबाद तहसील व जनपद -सीतापुर से प्रकाशित तथा महावीर आफसेट 28, हीवेट रोड लखनऊ से मुद्रित। सम्पादक रवि कुमार अवस्थी समाचार पत्र में छपे समस्त समाचार संवाददाताओं के अपने श्रोत एवं संकलन हैं, जिनसे सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **नोट:**-उपरोक्त सभी पद अवैतनिक एवं स्वयंसेवी हैं तथा समाचार पत्र से सम्बंधित सारे विवादो का न्याय क्षेत्र सीतापुर होगा। **R.N.I NO. UPHIN/2012/43078 मो0 नं0 -9511151254,** E-Mail :- news@swatantraprabhat .com

संक्षिप्त ख़बरें

अमूल दूध डेयरी की बोलेरो एवं पारस दूध डेरी की पिकअप का हुआ भयंकर एक्सीडेंट

हरदोई कछौना के अंतर्गत दलेलनगर से आगे बाघाडंडा मोड पर दूध लेकर इनायतपुर की तरफ से जा रही पारस कंपनी की पिकअप बाघाडंडा की तरफ से आ रही बोलेरा दोनों गढ़ी तेज रफ्तार में थी जैसे ही मोड पर पहुंची वो लोग कुछ समझ पाते तब तक दोनों गाड़ियों के आपस में टक्कर हो गई जिस व्यक्ति का पारस दूध डेयरी का डाला था उसका नाम आईनस संडीला था जो की पिकअप गाड़ी का स्वयं मलिक है जिसकी गाड़ी पारस दूध कंपनी में लगी हुई है इसके ड्राइवर के चोट भी आई है दूसरी गाड़ी बोलोरो थी जो की अमूल दूध कंपनी की गाड़ी थी जिसमें कंपनी के अधिकारी लोग मौजूद थे उसी बोलेरो में फील्ड इंचार्ज से सिद्ध राज और उनके साथ उनके स्टाफ के लोग मौजूद थे जिसमें दोनों गाड़ियों के लोगों को चोट आई पिकअप में दूध की ढेरी की कैन रखी हुई थी जिन कैनो का सारा दूध फैल गया।

पॉलीटेक्निक इंस्टीट्यूट संडीला में टैबलेट का किया गया वितरण।

हरदोई। संडीला में पॉलीटेक्निक इंस्टीट्यूट में टैबलेट वितरण कार्यक्रम के तहत उत्तर प्रदेश सरकार के सेवा सुरक्षा एवं सुशासन के 8 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में राजकीय पॉलिटेक्निक संडीला के छात्रों को टैबलेट वितरण किया गया। इस अवसर पर विधायक संडीला अलका सिंह अर्कवंशी, बी0 डी0 ओ0 संडीला प्रतिभा शर्मा, मंडल अध्यक्ष मल्हेरा सर्वेश राठौर, अमर गुप्ता, भाजपा नेता पंकज अवस्थी एवं राजकीय पॉलीटेक्निक इंस्टीट्यूट संडीला का समस्त स्टॉफ उपस्थित रहा।

आधे अधूरे सड़क निर्माण से पछोहा क्षेत्र के क्षेत्रवासी असंतुष्ट जनसमूह द्वारा धरना प्रदर्शन

भरखनी/हरदोई भरखनी क्षेत्र के पचदेवरा थाने के अंतर्गत एक ऐसी भी सड़क है, जिसका निर्माण कार्य सदियों से अधूरा पड़ा है।जी हां हम बात कर रहे हैं मां दुर्गा के प्राचीन मंदिर चिलौआ की।जहां पर प्रतिवर्ष माता रानी का भव्य मेला लगता है। किसी तरह सड़क का निर्माण कार्य तो हुआ परंतु आधा अधूरा ?।जिससे पछोहा क्षेत्र के कई ग्रामीण परेशान हो गए। जिसको लेकर पछोहा क्षेत्र के ग्रामीणों ने और जलालाबाद के ग्रामीणों ने विशाल धरना प्रदर्शन कर अनशन पर बैठ गए हैं। ग्रामीणों का कहना है,कि रोड निर्माण कार्य जल्द से जल्द पूरा कराया जाए। और समस्या का निदान कराया जाए। अनशन में उपस्थित रहे रामवीर सिंह पूर्व सदस्य जिला पंचायत) मोहित शुक्ला प्रत्याशी सदस्य जिला पंचायत) भरखनी द्वितीय, अनमोल दीक्षित, शिवम तिवारी, अंशुल मिश्रा, आलोक मिश्रा, प्रबल पांडे प्रधान) मनोज पांडे, ओम प्रकाश शुक्ला, कुलदीप दीक्षित, सुनील दीक्षित, अनिल दुबे,पवन दुबे एवं क्षेत्र के कई किसान और मजदूर साथी इस धरना प्रदर्शन में उपस्थित रहे।

खेल मैदान का प्रभारी मंत्री अनिल राजभर ने फीता काट कर किया उद्घाटन

सिद्धार्थनगर । प्रदेश के मंत्री श्रम एवं सेवायोजन, समन्वय विभाग /जनपद प्रभारी मंत्री अनिल राजभर द्वारा बर्डपुर ब्लाक के ग्राम पंचायत बर्डपुर न0 4 में 38.47 लाख की लागत से निर्मित स्व0 अटल विहारी वाजपेयी खेल मैदान का उद्घाटन किया गया। खेल मैदान में चेन्जिग रूम, दर्शक दीर्घा, ध्यान केन्द्र, ओपन जिम, शौचालय, बाउण्ड्रीवाल, बेंच, लाइट, पेन्टिंग/चित्रकारी आदि का कार्य

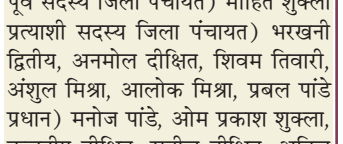

कराया गया है। प्रदेश के श्रम एवं सेवायोजन, समन्वय विभाग मंत्री/जनपद प्रभारी मंत्री अनिल राजभर ने कहा कि इस मिनी स्टेडियम से किसान भाईयों के बच्चे खेल का प्रैक्टिस कर सकते हैं। प्रैक्टिस करके जिले का व देश का नाम रोशन करेंगे। इसके साथ ही साथ भारत सरकार/प्रदेश सरकार खिलाड़ियों के प्रति संवेदनशील है। इस दौरान विधायक श्यामधनी राही ने कहा कि भारत सरकार /प्रदेश सरकार द्वारा सभी ग्राम पंचायतों में खेल मैदान बनाने का कार्य कर रही है जिससे ग्रामीण क्षेत्र के बच्चे भी खेल में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर जनपद स्तर से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुंच सके। इस दौरान जिलाध्यक्ष भाजपा कन्हैया पासवान, सांसद प्रतिनिधि रिंकू पाल, जिलाधिकारी डा0 राजा गणपति आर0, पुलिस अधीक्षक डा0 अभिषेक महाजन, मुख्य विकास अधिकारी जयेन्द्र कुमार, नीतेश पाण्डेय ने कार्यक्रम को सम्बोधित किया। इस अवसर पर जिला विकास अधिकारी गोपाल प्रसाद कुशवाहा, डीसी मनरेगा संदीप सिंह, जिला पंचायत राज अधिकारी पवन कुमार, खण्ड विकास अधिकारी बर्डपुर विजय सिंह व ग्राम प्रधान प्रतिनिधि मुलायम सिंह, सचिव अजहरूद्दीन उपस्थित रहे।

सेवा, सुरक्षा और सुशासन नीति कार्यक्रम में बजाया विकास कार्यों का डंका

..... योगी सरकार के 8 वर्षों के सफल कार्यकाल की कार्यक्रम में गिनाई गई उपलब्धियां। .....मुख्य अतिथि विधायक अमरेश रावत एवं विशिष्ट अतिथि रामचन्द्र प्रधान की मौजूदगी में कार्यक्रम हुआ आयोजित।

स्वतंत्र प्रभात

विनीत कुमार मिश्रा

लखनऊ। बुधवार को राजधानी लखनऊ के विकासखण्ड मोहनलालगंज के अटल बिहारी बाजपेयी सभागार कक्ष में उ0प्र0 सरकार की ÷ सेवा, सुरक्षा और सुशासन की नीति÷ के अन्तर्गत उ0प्र0 सर?कार के 8 वर्षों के कार्यकाल की उपलब्धियों की जानकारी एवं प्रेस वार्ता कार्यक्रम का आयोजन का किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में विधायक मोहनलालगंज अमरेश रावत एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में सदस्य विधान परिषद रामचन्द्र प्रधान की मौजूदगी रही । कार्यक्रम की शुरुआत माँ सरस्वती की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर एवं दीप प्रज्ज्वलित के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम में मंच का संचालन मनरेगा तकनीकी सहायक राज किशोर शुक्ल की अगुवाई में किया गया । कार्यक्रम के दौरान ब्लाक परिसर में विभिन्न योजनाओं के बारे में जानकारी देने हेतु विभिन्न योजनाओं के पण्डाल में स्टाल लगाए गए जिसकी जानकारी कार्यक्रम में आए हुए अतिथियों ने सम्बंधित विभागों से प्राप्त की गई । इसके बाद विधायक मोहनलालगंज अमरेश रावत एवं सदस्य विधान परिषद रामचंद्र प्रधान द्वारा उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा चलाये जा रहे जनकल्याणकारी योजनाओं एवं विकास योजनाओं के बारे में अपने क्षेत्र में अपनी निधि से कराये गये कार्यों के बारे में विस्तृत जानकारी दी गयी। मुख्य अतिथि विधायक अमरेश रावत ने बताया कि विकास खण्ड मोहनलालगंज क्षेत्र में मनरेगा योजना अंतर्गत 18 अमृत सरोवरों की एवं 33 आंगनबाड़ी केन्द्र , 22 खेल मैदान ,2 अन्नपूर्णा भवन (पी0डी0एस0 शाप) , 32 स्कूल बाउन्ड्रीवॉल, 5 एस0एच0जी0 शेड निर्माण , 336 व्यक्तिगत कैटल शेड/बकरी शेड का निर्माण कराया गया । इसी प्रकार विकास खण्ड गोसाईगंज में मनरेगा द्वारा 28 अमृत सरोवर, 32 आंगनबाड़ी केन्द्र , 26 खेल मैदान , 2 अन्नपूर्णा भवन (पी0डी0एस0 शाप), 5 एस0एच0जी0 शेड निर्माण तथा 103 व्यक्तिगत कैटल शेड/बकरी शेड का निर्माण कराया गया। इसी प्रकार विधान सभा क्षेत्र में 2017 से 2025 तक कुल 5466 लाभार्थियों को प्रधानमंत्री आवास, 243 लाभार्थियों को मुख्यमंत्री आवास का लाभ प्रदान किया गया। विधानसभा क्षेत्र में कुल 43974 लाभार्थियों को किसान सम्मान निधि तथा विभिन्न योजनाओं में कुल 28469 लाभार्थियों को पेन्शन का लाभ दिया गया। उन्होंने ने यह भी बताया कि आर्थिक रूप से गरीब परिवारों की बिटिया की शादी हेतु मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के अन्तर्गत गरीब कन्याओं का विवाह सम्पन्न कराया गया। कार्यक्रम के समापन के दौरान ब्लाक प्रमुख ओमप्रकाश शुक्ला ने कार्यक्रम में आए हुए अतिथियों एवं लोगों को धन्यवाद ज्ञापित किया । कार्यक्रम में ब्लाक प्रमुख मोहनलालगंज ओमप्रकाश शुक्ला (विन्ध्येश्वरी), ब्लाक प्रमुख गोसाईगंज विनय कुमार वर्मा डिंपल, भाजपा की क्षेत्रीय उपाध्यक्ष चन्द्रा रावत, जिला महामंत्री राम लाल वर्मा, भाजपा जिलाध्यक्ष लखनऊ युवा मोर्चा धीरू पाण्डेय , गोसाईगंज चेयरमैन निखिल मिश्रा, चेयरमैन प्रतिनिधि नगर पंचायत मोहनलालगंज अजय पाण्डेय, जिला संयोजक शंभूनाथ पाण्डेय, सभी मण्डलों के मण्डल अध्यक्ष एवं बड़ी मात्रा में भाजपा कार्यकर्ता उपस्थिति रहे । इस दौरान उपजिलाधिकारी मोहनलालगंज अंकित शुक्ला, खण्ड विकास अधिकारी आशुतोष कुमार श्रीवास्तव, एसीपी मोहन?लालगंज रजनीश कुमार वर्मा , एडीओ पंचायत गोसाईगंज कमल किशोर शुक्ला , एडीओ पंचायत मोहनलालगंज अशोक यादव , एपीओ मोहनलालगंज उदय राज शर्मा , एपीओ गोसाईगंज गौरव त्रिपाठी सहित अन्य विभागों के विभागीय अधिकारियों की मौजूदगी रही ।

अव्यवस्था से नाराज दिखे प्रधान व पत्रकार

मोहनलालगंज। विकास खण्ड मोहनलाल गंज में आयोजित कार्यक्रम में अधिक संख्या में आये उत्साहित भाजपा कार्यकर्ताओं के पत्रकारों एवं प्रधानों की सीटों पर कब्जा जमाने के कारण कुछ प्रधानों व पत्रकारों में नाराजगी भी दिखाई दी , जिसके चलते प्रधान एवं पत्रकार कार्यक्रम बीच में ही छोड़कर चले गए।

बीकेटी विधायक ने योगी सरकार के 8 वर्षों की गिनाई उपलब्धियां

स्वतंत्र प्रभात

बीकेटी /लखनऊ। लखनऊ के बीकेटी ब्लॉक में प्रदेश सरकार के 8 और केंद्र सरकार के 10 वर्ष सफलता पूर्वक पूरे होने पर ब्लॉक परिसर में कई विभागों ने अपने-अपने टेंट लगाकर अपने कार्यों और सेवाओं को प्रदर्शित करने के लिए प्रदर्शनी लगाई । कार्यक्रम की शुरुआत बीकेटी विधायक योगेश शुक्ला के साथ जिला अध्यक्ष विजय मौर्य ने फीता काट कर किया ।कार्यक्रम के माध्यम से लोगों को केंद्र सरकार और राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के बारे में विस्तृत तरीके से जानकारी दी । बीकेटी विधायक योगेश शुक्ला द्वारा क्षेत्र में कराए जा रहे विकास के विषय में जानकारी दी अपने संबोधन में कहा कि प्रदेश सरकार के सफलतम 8 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में यह कार्यक्रम आयोजित किया गया है। उन्होंने कहा कि, महिला सशक्तिकरण और सुरक्षा में उत्तर प्रदेश पूरे देश में पहले स्थान पर है। पीएम उज्ज्वला योजना, अटल पेंशन योजना और ग्रामीण स्वच्छता मिशन में भी यूपी ने शीर्ष स्थान हासिल किया है। सरकार ने किसानों के सशक्तिकरण के लिए कई योजनाएं लागू की हैं, जिससे वे समृद्ध हो रहे हैं। गांवों की सड़कों को शहरों जैसा बनाया जा रहा है और उच्च शिक्षा के विस्तार के लिए नए कॉलेज और विश्वविद्यालय खोले गए हैं। स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाया जा रहा है। आवास योजना, गैस कनेक्शन और राशन वितरण जैसी योजनाओं को लागू किया है। कार्यक्रम में विधायक ने लाभार्थियों को प्रधानमंत्री आवास की चांभी,आयुष्मान योजना के कार्ड, विकलांग , वृद्धावस्था पेंशन सहित स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को किट भी वितरित की। कार्यक्रम में लखनऊ के नवनियुक्त जिला अध्यक्ष विजय मौर्य , जिला उपाध्यक्ष रवि प्रकाश तिवारी,मंडल अध्यक्ष संदीप यादव, पूर्व मंडल अध्यक्ष गौरव सिंह चौहान,ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि रामेन्द्र सिंह मोनू,कामता रावत,जिला मीडिया प्रभारी विवेक सिंह,एसडीएम बीकेटी सतीश चंद्र त्रिपाठी, खंड विकास अधिकारी बीकेटी पूजा पांडे के साथ कई विभागों के अधिकारी शामिल हुए।

भाजपा मंडल अध्यक्ष नेकपाल यादव ने टीम के साथ जिलाध्यक्ष का किया भव्य स्वागत

स्वतंत्र प्रभात

माल। जे एम एस पब्लिक स्कूल में भारतीय जनता पार्टी के नवनिर्वाचित जिलाध्यक्ष विजय मौर्य का भव्य स्वागत किया गया। आपको बता दें कि विकासखंड माल के गहदो स्थित जे एम एस पब्लिक स्कूल में भाजपा मंडल अध्यक्ष(रहीमाबाद) नेकपाल यादव के नेतृत्व में जिलाध्यक्ष सम्मान समारोह कार्यक्रम आयोजित किया गया।जिलाध्यक्ष सम्मान समारोह कार्यक्रम में पदाधिकारी व कार्यकर्ताओं ने नवनिर्वाचित जिलाध्यक्ष विजय मौर्य का फूल माला पहना कर स्वागत किया।कार्यक्रम का शुभारंभ जिलाध्यक्ष विजय मौर्य व मंडल अध्यक्ष नेकपाल यादव ने दीप प्रज्वलित कर किया। सभा को संबोधित करते हुए मौर्य ने कहा कि यह सम्मान भाजपा के प्रत्येक समर्पित कार्यकर्ता का सम्मान है।उन्होंने इस सम्मान को संजोकर रखने और अपने दायित्वों का पूर्ण निर्वहन करने का संकल्प लिया। उन्होंने राष्ट्र, संगठन और कार्यकर्ताओं की उम्मीदों पर खरा उतरने को अपना जीवन लक्ष्य बताया। इस मौके पर मंडल अध्यक्ष नेकपाल यादव ने कहा कि भाजपा हमारे देश की इकलौती ऐसी पार्टी है जो युवाओं को बढ़ाने और वरिष्ठ कार्यकर्ताओं का सम्मान बढ़ाने का काम करती है। इस मौके पर जिला उपाध्यक्ष रामबिलास रावत,मंत्री जानकी प्रसाद विमल, चेयरमैन काकोरी रोहित साहू , पूर्व मंडल अध्यक्ष रविराज लोधी, ब्लॉक प्रमुख प्र. काकोरी शिशिर यादव, मंडल महामंत्री संग्राम सिंह, पूर्व मंडल अध्यक्ष शिवशरण सिंह, सजीवन लाल शर्मा,सुशील गुप्ता,निर्मल रस्तोगी, मंडल उपाध्यक्ष के एल दुबे, पूर्व मंडल महामंत्री योगेंद्र सिंह, शुभम दीक्षित, रामसेवक साहू, सरोज गुप्ता,दुर्गेश प्रताप सिंह, समर्थ सिंह, हरिओम,नरेश यादव, सर्वेश राजपूत,जितेंद्र गौतम, जितेंद्र सिंह , संदीप सिंह सहित सैकड़ों की संख्या में पदाधिकारी व कार्यकर्ता मौजूद रहें।

एनएसएस कैंप में छात्र-छात्राओं ने सीखा वेस्ट मटेरियल से साज -सज्जा के उपकरण बनाने के तरीके

छात्र छात्रों को सड़क सुरक्षा संबंधी नियमों की दी गई जानकारी

स्वतंत्र प्रभात

सीतापुर। चंद्रभान गुप्त कैसे स्नातकोत्तर महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना की सभी यूनिटी के छात्र-छात्राओं को आर्ट एंड क्राफ्ट की संयोजिका राखी निगम द्वारा वेस्ट मटेरियल से उत्पाद बनाने पर प्रशिक्षित किया गया। लखनऊ स्थित चंदन आयुष हॉस्पिटल द्वारा शिविर कैंप लगाया गया। डॉ बी के सिंह के द्वारा छात्र-छात्राओं का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया तथा उचित सलाह दी एवं दवाया भी वितरित की गई। ट्रेफिक ट्रेनिंग पार्क कृष्ण नगर के ट्रेनर पंकज शर्मा द्वारा सड़क सुरक्षा संबंधी नियमों की विधिवत जानकारी दी गई। सड़क सुरक्षा संयोजक सैयद एहतेशाम ने सड़क सुरक्षा के नियमों का पालन करने ड्राइविंग लाइसेंस बनवाने के नियमों पर विधिवत चर्चा की। इस अवसर पर महाविद्यालय के समन्वयक धनेंद्र कुमार सिंह, डॉ आशुतोष श्रीवास्तव, डॉ उपमा त्रिपाठी, डॉ रश्मि पांडे, डॉ दीप्ति श्रीवास्तव श्रीमती प्रतिमा सिंह, डॉ स्वाहा सी चंदा, डॉ शिवमंगल चौरसिया, शिव बहादुर सिंह चौहान खेल प्रशिक्षण रामप्रकाश सिंह सहित 210 छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया। कृषि महाविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉ सत्येंद्र कुमार सिंह ने बताया कि 27 मार्च को एन एस एस कैंप का समापन होगा जिसमें बक्शी का तालाब कस्बे में साफ -सफाई अभियान चलाया जाएगा।

पति की क्रूरता, तीसरी बेटी होने पर पत्नी को पति ने पीटा और पिलाया जहर, महिला की स्थिति खतरे से बाहर

स्वतंत्र प्रभात

सीतापुर जनपद सीतापुर में लगातार तीसरी बार पत्नी द्वारा बेटी को जन्म देने पर एक पति हैवान बन गया पत्नी का आरोप है कि पति शराब पीकर मारता पीटता था और जहर खिलाने का भी आरोप लगाया है जिला अस्पताल में भर्ती महिला की हालत अब खतरे से बाहर है पीड़ित पत्नी ने मामले की शिकायत पुलिस से की है पुलिस मामले की जांच पड़ताल में जुटी हुई है। मामला पिसावा थाना इलाके का है यहां की ग्राम लौकी निवासी महिला पूनम ने कुछ दिन पूर्व तीसरी बेटी को जन्म दिया था बताया जाता है कि लगातार तीसरी बेटी होने पर पति लक्ष्मण शराब पीकर पत्नी को रोजाना मारता पीटता था इसी से अजीज होकर होकर बीती रात भी पत्नी को पीटा और जबरन जहर पीला दिया परिजनों ने महिला को इलाज के लिए जिला अस्पताल में भर्ती कराया है। जहां उसका उपचारा चल रहा था जिला अस्पताल में भर्ती महिला अब खतरे से बाहर है महिला ने थाने में शिकायती पत्र देकर पति के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है पीड़ित महिला का कहना है कि अगर पति उसे सुरक्षित रखेगा तो वह ससुराल जाएगी वरना वह अपने मां के घर चली जाएगी!!

पीएसी की बिल्डिंग से गिरा मजदूर मची चीख पुकार, 11 वीं मंजिल पर शटरिंग खोलते वक्त हुआ हादसा

स्वतंत्र प्रभात

सीतापुर। जनपद सीतापुर में सेकेंड बटालियन पीएसी की निर्माणाधीन बहुमंजिला इमारत पर काम करते समय मजदूर हादसे का शिकार हो गया शटरिंग खोलने के दौरान संतुलन बिगड़ने से मजदूर 11वीं मंजिल से नीचे आ गिरा इस हादसे में मजदूर की मौत हो गई सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजकर मामले की जांच पड़ताल शुरू कर दी है। मामला कोतवाली नगर इलाके का है यहां सेकेंड बटालियन पीएसी ने इन दिनों बहुमंजिला इमारत निर्माणाधीन है बताया जाता है कि आज निर्माणाधीन बिल्डिंग की 11वीं मंजिल पर स्लैब की शटरिंग खोलने का काम हो रहा था। हरगांव इलाके के ग्राम भरोसा निवासी सुरेश का 24 वर्षीय बेटा अंकित शटरिंग खोलने गया था बताया जाता है कि शटरिंग खोलने के दौरान अचानक अंकित का संतुलन बिगड़ा और वह 11वीं मंजिल से नीचे आ गिरा दर्दनाक हादसे की चीख पुकार स्थानीय मजदूरों और पीएसी कर्मियों ने मजदूर को गंभीर हालत में जिला अस्पताल में भर्ती कराया जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया हादसे की सूचना पर पहुंचे परिजन शव देखकर बदहवास है पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजकर मामले की जांच पड़ताल शुरू कर दी है!!

भाजपा को मजबूत बनाने की तैयारी RSS और VHP के साथ बैठक योगी सरकार की उपलब्धियां जन जन तक पहुंचाने का आह्वान

स्वतंत्र प्रभात

लहरपुर सीतापुर। लहरपुर में भारतीय जनता पार्टी की एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई मोहल्ला बेहटी में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नगर संघचालक श्रीनारायण मेहरोत्रा के आवास पर यह बैठक हुई। बैठक में भाजपा जिलाध्यक्ष राजेश शुक्ला और पूर्व विधायक सुनील वर्मा ने RSS और VHP के कार्यकर्ताओं के साथ विचार-विमर्श किया उन्होंने योगी सरकार के 8 साल पूरे होने पर सरकार की उपलब्धियों को जनता तक पहुंचाने का आह्वान किया जिलाध्यक्ष राजेश शुक्ला ने कार्यकर्ताओं को पार्टी की रीढ़ बताया। उन्होंने कहा कि कार्यकर्ताओं के प्रयास से ही भाजपा विश्व की सबसे बड़ी पार्टी बनी है पूर्व विधायक सुनील वर्मा ने प्रदेश सरकार की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला उन्होंने सेवा, सुरक्षा और सुशासन के क्षेत्र में सरकार के कार्यों की जानकारी दी भाजपा नेता विरेंद्रपुरी और RSS नगर संघचालक श्रीनारायण ने क्षेत्र की समस्याओं से नेतृत्व को अवगत कराया कार्यक्रम में ब्लॉक के मुकुंदे लाल त्रिवेदी, निरंकार मेहरोत्रा, हरीश रस्तोगी, नगर भाजपा अध्यक्ष रामे बाजपेई समेत कई वरिष्ठ कार्यकर्ता मौजूद रहे!!

बाइक को टक्कर मारने के बाद खाई में पलटी बस, एक की हुई मौत आधा दर्जन यात्री घायल

स्वतंत्र प्रभात

सीतापुर! जनपद सीतापुर में यात्रियों से भरी बस अचानक बेकाबू होकर सड़क किनारे खाई में पलट गई हादसा उस वक्त हुआ जब ओवरटेक करने के दौरान बाइक सवार को टक्कर लगी है इस दर्दनाक हादसे में आधा दर्जन से अधिक यात्रियों के घायल होने की सूचना है वहीं एक व्यक्ति की मौत हो गई जिसकी अभी पहचान नहीं हो सकी है। सूचना पर पहुंची पुलिस ने बस में सवार लोगों को निकालकर उपचार हेतु सीएचसी भिजवाया है हादसे के बाद लोगों की मौके पर भारी भीड़ जमा है। मामला लहरपुर कोतवाली इलाके का है यहां लहरपुर से तंबौर यात्रियों को लेकर जा रही प्राइवेट बस लालपुर गांव के निकट बाइक सवार को टक्कर मारते हुए बेकाबू होकर सड़क किनारे पलट गई। दर्दनाक हादसे में बस में सवार आधा दर्जन से अधिक लोग चोटिल हो गए वहीं एक व्यक्ति की मौत की पुष्टि पुलिस ने की है जिसकी पहचान नहीं हो सकी है हादसे के बाद मौके पर चीख पुकार सुनकर स्थानीय लोग मौके पर पहुंचे और मामले की सूचना पुलिस को देकर घायलों को तत्काल बाहर निकालने का प्रयास किया सूचना पर पहुंची पुलिस ने बस में सवार घायल यात्रियों को उपचार के लिए सीएचसी भिजवाया जहां डॉक्टरों ने एक व्यक्ति को मृत घोषित कर दिया जबकि कई अन्य यात्री घायल अवस्था में में अस्पताल पहुंचे जहां उनका उपचार चल रहा है!!

त्योहारों को लेकर पीस कमेटी की बैठक, पुलिस अधिकारियों ने कहा, ईद और नवरात्र मिल जुलकर मनाएं

लहरपुर सीतापुर की कोतवाली में आगामी त्योहारों को शांतिपूर्वक मनाने के लिए पीस कमेटी की बैठक आयोजित की गई बैठक की अध्यक्षता पुलिस क्षेत्राधिकारी सुशील कुमार यादव ने की क्षेत्राधिकारी यादव ने कहा कि सभी लोग त्योहारों को शांतिपूर्ण और सौहार्दपूर्ण माहौल में मनाएं उन्होंने चेतावनी दी कि कोई नई परंपरा शुरू न करें। अन्यथा कानूनी कार्रवाई की जाएगी कोतवाली प्रभारी विजयेंद्र सिंह ने कहा कि त्योहार प्यार और एकता का संदेश देते हैं उन्होंने स्पष्ट किया कि ईद की नमाज केवल ईदगाह में ही पढ़ी जाएगी सार्वजनिक स्थलों पर नमाज पढ़ने की अनुमति नहीं होगी बैठक में मौलाना अब्दुल रहमान, मास्टर फुरकान, प्रधान विवेक शुक्ला, जिला पंचायत सदस्य प्रतिनिधि सोनू, अरुण सिंह आचार्य, सभासद संजीव अवस्थी समेत कई गणमान्य लोग मौजूद रहे बीएमसी यूनिसेफ के अखिलेश पाण्डेय भी बैठक में शामिल हुए!!

बाइक सवार बदमाश ने लूटे 68 हजार रुपए, शादी में गाड़ी देने के लिए बैंक से निकले थे रुपए

सीतापुर जनपद सीतापुर में तहसील गेट के पास एक बड़ी वारदात सामने आई है बाइक सवार दो बदमाशों ने एक बुजुर्ग और उनकी नातिन से 68 हजार रुपए लूट लिए यह घटना महमूदाबाद कोतवाली क्षेत्र में हुई ग्राम भरावन की रहने वाली पूजा देवी अपने नाना दर्शन लाल के साथ बुआ की शादी में देने के लिए बाइक खरीदने आई थी। दोनों ने स्टेट बैंक से 50 हजार रुपए निकाले इसमें पहले से रखे 18 हजार रुपए मिलाकर बैग में रख लिए बैंक से निकलने के बाद दोनों चाट खाने के लिए सड़क किनारे एक ठेले पर रुके उन्होंने अपनी साइकिल को सड़क किनारे खड़ी कर दी इसी दौरान दो बाइक सवार आए और साइकिल में टंगे बैग को लेकर रामकुंड मार्ग की तरफ भाग निकले पीड़ितों ने तुरंत पुलिस को सूचना दी पुलिस ने मौके पर पहुंचकर पीड़ितों के बयान दर्ज किए और जांच शुरू कर दी है पूजा और उनके नाना का रो-रोकर बुरा हाल है उनकी बुआ की शादी 18 अप्रैल को है और वे इन्हीं पैसों से शादी में गाड़ी देने की योजना बना रहे थे!!

संक्षिप्त ख़बरें

जिला निर्वाचन अधिकारी ने ईवीएम वेयरहाउस का किया निरीक्षण

शाहजहांपुर/ जिला निर्वाचन अधिकारी धर्मेंद्र प्रताप सिंह ने अपर जिलाधिकारी प्रशासन/उप जिलाधिकारी निर्वाचन संजय कुमार पाण्डेय, नगर मजिस्ट्रेट प्रवेन्द्र कुमार सहित राजनीतिक दलों के पदाधिकारी के साथ डीएम कम्पाउन्ड स्थित ईवीएम/वीवीपैट वेयरहाउस की सुरक्षा व्यवस्था का त्रैमासिक निरीक्षण किया। उन्होंने गोदामों में रखी ईवीएम, बीयू/सीयू तथा वीवीपैट की सुरक्षा मानकों को परखा तथा जिला निर्वाचन अधिकारी ने गोदाम में डीडीटी का छिड़काव कराने के निर्देश दिए। उन्होंने सीसीटीवी कैमरों को भी देखा जो सुचारू रूप से संचालित पाए गए। इस दौरान उन्होंने पंजिकाओ का अवलोकन भी किया।

केन्द्र सरकार की नीतियों की खिलाफत में आये शिक्षक

मथुरा। बुधवार को किशोरी रमण महाविद्यालय के शिक्षकों ने एआईफुक्टो, इंडिया के आह्वान पर आज शिक्षकों की विभिन्न लंबित मांगों एवं केन्द्र सरकार की शिक्षा एवं शिक्षक विरोधी नीतियों के खिलाफ लोकतांत्रिक तरीके से अपनी मांगों के समर्थन में काली पट्टी बांधकर प्रदर्शन करके अपना कार्य विधिवत किया। इस दौरान डिग्री कालेज के प्रवक्ता शिक्षक एकता, इंकलाब जिंदाबाद के नारे लगाए। प्रदर्शन में प्रो. डीके सिंह , प्रो. राजेश अग्रवाल,प्रो. कामना पांड्या ,प्रो. उमेश शर्मा , प्रो. विमलेश,प्रो. अमर कुमार धारीवाल, प्रो. राजेश गौतम, प्रो. चिंतामणि देवी, प्रो. संजीव श्रीवास्तव, प्रो. राजीव वार्ष्णेय,डॉ. राजेश सारस्वत, डॉ. आलोक श्रीवास्तव, डॉ. अशोक कुमार कौशिक, डॉ. रामदत्त मिश्रा, डॉ. अजय उपाध्याय, डॉ. नवीन अग्रवाल, डॉ. ममता रानी कौशिक, लेफ्टिनेंट डॉ. कपिल कौशिक, डॉ. विजय नारायण सिंह ,डॉ. विजयानंद , डॉ. हिमांशु तिवारी शामिल रहे।

तीन अप्रैल को यमुना जन्मोत्सव, बेहतर व्यवस्था की मांग की

मथुरा। श्री माथुर चतुर्वेद परिषद के प्रतिनिधि मंडल ने यमुना जन्मोत्सव पर व्यवस्था करने की मांग को लेकर जिलाधिकारी चंद्र प्रकाश सिंह को ज्ञापन दिया। जिसमें परिषद के उपाध्यक्ष शिव कुमार चतुर्वेदी, महामंत्री राकेश तिवारी एडवोकेट ने नेतृत्व परिषद के पदाधिकारियों ने 3 अप्रैल को आयोजित होने वाले यमुना जन्मोत्सव के दिन यमुनाजी के सभी घाटों की सफाई ,लाइटिंग की व्यवस्था और शोभा यात्रा वाले मार्गों पर सजावट, सफाई, सफेदी डालने की मांग को लेकर ज्ञापन जिलाधिकारी को दिया गया। जिलाधिकारी परिषद के पदाधिकारियों से ज्ञापन लेकर नगर मजिस्ट्रेट को यमुना जयंती महोत्सव की व्यवस्था कराने के लिए नामित कर दिया। यहां से तो नगर मजिस्ट्रेट से भी मुलाकात करके उनको ज्ञापन की कॉपी दी गई। जिस पर उन्होंने भी आश्वासन दिया कि यमुना महोत्सव से पहले सभी कार्य पूर्ण कराए जाएंगे। माथुर चतुर्वेद परिषद के महामंत्री राकेश तिवारी ने बताया कि इस शोभा यात्रा से पूर्व 29 मार्च को दोपहर तीन बजे एक बैठक यमुना प्रदूषण मुक्ति हेतु अपने विचार रखने हेतु गोष्ठी चतुर्वेदी समाजवाडी भेंस बहोरा में होगी। उन्होंने सभी यमुना भक्त व धर्म प्रेमी जनता को इसमें भाग लेने के लिए आमंत्रित किया है। इसके अलावा समाजसेवी संस्थाओं से भी तीन अप्रैल को निकालने वाली यमुना शोभायात्रा में अपनी झांकिया निकालने का अनुरोध किया है। यह शोभायात्रा जन जागरण शोभा यात्रा के रूप में निकली जाएगी। इसमें संस्थाओं के पदाधिकारियों से प्रदूषण मुक्त कराने हेतु अपना सहयोग देने की अपील की है। ज्ञापन देने वालों में संजय चतुर्वेदी एल्पाइन, संजीव चतुर्वेदी एडवोकेट, संजय, मंत्री राजवीर सिंह, नवोदित गोस्वामी आदि अनेकों यमुना भक्त मौजूद थे।

पहाड़ी से उतरते समय फेल हुई ब्रैक मकान में टकराई गाड़ी

बरसाना, जहां हजारों श्रद्धालु पैदल श्रीराधारानी मन्दिर दर्शन करने जाते हैं उस मार्ग पर चार पहिया वहान की ब्रेक फैल होने से हो सकती थी बड़ी घटना। जयपुर मन्दिर मार्ग से जहां हजारों श्रद्धालु प्रतिदिन पैदल दर्शन करने श्रीराधारानी मन्दिर जाते हैं। उसी मार्ग पर जयपुर मन्दिर मार्ग पर चार पहिया गाडियों को आना जाना बड़ी संख्या में बना रहता है। जिससे जयपुर मन्दिर मार्ग क्षतिग्रस्त व कमजोर हो गया है। वहीं डटक। के टीन शेड जो पैदल चलने वाले श्रद्धालुओं की बेहतर सुविधा के लिए लगायी है। उन टीन शैडो पर इन चार पहिया वाहनों की वजह से पैदल चलने वाले श्रद्धालुओं की सुविधा को ग्रहण लग रखा है। वहीं जयपुर मन्दिर मार्ग पर पहाड़ी से उतरते समय एक चार पहिया वाहन की ब्रेक अचानक फैल हो गयी और डटक। टीन शैड प्रारम्भ होने के पास तेजगति से आकर एक मकान से टकरा गयी। पैदल दर्शन करने जा रहे श्रद्धालुओं ने ऐसे तैसे अपने आपको बचाया। बचते समय कुछ श्रद्धालुओं के हल्की फुल्की चोट भी आ गई हैं। बरसाना वासियों ने चार पहिया वाहनों को जयपुर मंदिर मार्ग से रोकने के लिए नगर पंचायत बरसाना से लेकर जिलाधिकारी व मथुरा-वृंदावन विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष व जनसुनवाई के माध्यम से उत्तर प्रदेश के मुखिया योगी आदित्यनाथ को भी शिकायत की है।

ईद की नमाज से पहले प्रतिबंधित पशुओं को अभियान चलाकर पकड़ा जाए : डीएम

स्वतंत्र प्रभात

शाहजहांपुर। जिलाधिकारी धर्मेंद्र प्रताप सिंह की अध्यक्षता में आगामी त्यौहार चैत्र नवरात्रि तथा रमजान एवं ईद-उल-फितर के दृष्टिगत शांति एवं कानून व्यवस्था के संबंध में धर्म गुरुओं के साथ बैठक कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित की गई। बैठक में धर्म गुरुओं ने समस्याएं एवं सुझाव साझा किये। जिलाधिकारी ने मंदिरों के आसपास साफ सफाई चूना छिड़काव सहित आदि व्यवस्थाएं कराने के निर्देश दिए। उन्होंने ने निर्देश दिए कि ढीले विद्युत तार सही किए जाएं तथा मंदिरों के सीसीटीवी कैमरे संचालित रहे कैमरों का व्यू अवश्य चेक कर लिया जाए। मंदिरों के आसपास स्ट्रीट लाइटें एवं आने जाने वाले मार्गों को सही कराया जाए। मंदिरों के आसपास संचालित मीट की दुकानें बंद कराई जाए। जिलाधिकारी ने आलविदा एवं ईद-उल-फितर के दृष्टिगत निर्देश दिए कि ईद की नमाज से पहले प्रतिबंधित पशुओं को अभियान चलाकर पकड़ा जाए। उन्होंने मस्जिदों एवं ईदगाहों को जाने वाले मार्गों के पथ प्रकाश, जल आपूर्ति, रास्ते एवं लूज विद्युत लाइनों को सही कराने हेतु संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया। जिलाधिकारी ने कहा कि यह सुनिश्चित किया जाए कि रमजान अलविदा की नमाज मस्जिदों एवं ईदगाहों के परिसर के अंदर ही पढ़ी जाए। उन्होने कहा कि सभी आवश्यक व्यवस्थाएं समय से पूर्ण कर ली जाए। जिलाधिकारी ने कहा कि सभी लोग मिलजुल कर अच्छे से त्योहार मनाए। उन्होंने कहा कि सभी को शासन की गाइड लाइन का पालन करना होगा। पुलिस अधीक्षक राजेश द्विवेदी ने कहा कि सुरक्षा पर हमारा पूरा फोकस रहेगा सभी लोग त्योहारों को अमन चैन से खुशियों के साथ मनाएं तथा कोई नई परंपरा ना डालें। उन्होंने कहा कि सभी कार्यक्रमों के लिए पूर्ण सुरक्षा मिलेगी। सभी लोग मिलजुलकर अच्छे से पर्वों को मनाए। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी प्रशासन संजय कुमार पाण्डेय, अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व अरविंद कुमार, एसपी सिटी देवेंद्र कुमार, एसपी ग्रामीण दीक्षा भंवरे एवं नगर मजिस्ट्रेट प्रवेन्द्र कुमार सहित अन्य संबंधित अधिकारियों एवं धर्मगुरु मौजूद रहे

27 वर्षों के संघर्ष ने किया कमाल,सेपक टकराव वर्ल्ड कप भारत के नाम : पेरिका सुरेश

स्वतंत्र प्रभात

नई दिल्ली। पाटलिपुत्रा स्पोर्ट्स कंपलेक्स पटना में आयोजित पांच दिवसीय सेपक टकराव वर्ल्ड कप में भारत ने 45 देश के प्रतिभागियों को शिकस्त देते हुए वर्ल्ड कप भारत के नाम कर इतिहास रस दिया है। सेपक टकराव वर्ल्ड कप में अपनी महत्वपूर्ण भागीदारी निभाने वाले तथा तेलंगाना प्रदेश सेपक टकराव फेडरेशन के अध्यक्ष पेरिका सुरेश ने सेपक टकराव फेडरेशन ऑफ इंडिया, भारतीय खिलाड़ियों,कोच एवं मैनेजर सभी का आभार व्यक्त करते हुए उन्हें विश्व कप जीतने की बहुत-बहुत बधाई दी। उन्होंने समस्त देशवासियों को इस जीत की बधाई देते हुए कहा कि हमारे खिलाड़ियों ने इस रोमांचक मुकाबले में अपनी योग्यता क्षमता एवं खेल कौशल को दिखाकर विश्व के सामने एक नए मापदंड रखा है। उन्होंने कहा कि भारत के इस जीत ने जहां देश का मान बढ़ाया है, वही नए खिलाड़ियों को यह जीत ऊर्जा प्रदान करेगा।भारत ने वर्ष 2017 में गचिबौली स्टेडियम हैदराबाद में प्रथम वर्ल्ड कप की मेजबानी की थी। भारत के खिलाड़ियों के 27 वर्षों के संघर्ष एवं वर्ल्ड कप जीतने का जज्बा रंग लाया है तथा विश्व पटेल पर भारत सेपक टकराव वर्ल्ड कप विजेता बनकर विश्व गुरु बनने का काम किया है।

शर्ट तो मिली पर ऋतिक का नहीं लगा सुराग

स्वतंत्र प्रभात

कलान शाहजहांपुर। थाना परौर क्षेत्र के गांव नरायन नगला निवासी अजय कुमार का 8 वर्षीय पुत्र ऋतिक 23 मार्च को सुबह रहस्यमय ढंग से लापता हो गया था।बताते हैं कि वह खेत पर बकरी चराने गया था।जिसकी गुमशुदगी थाने पर दर्ज कराई गई थी।पुलिस के प्रयासों के बाद भी ऋतिक का कोई सुराग नहीं लगा।घटना के चौथे दिन 26 मार्च को ऋतिक की शर्ट घर से लगभग 50 मीटर दूर गोलागंज मैन तिराहे के पास से ही मिली।परिजनों ने इसकी सूचना परौर पुलिस को दी।उसके परिजनों ने मिली शर्ट को पहचान कर बताया कि यह शर्ट ऋतिक की ही है।ऋतिक के परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल है। उधर लापता ऋतिक की शर्ट मिलने की जानकारी प्रभारी निरीक्षक अशोक कुमार सिंह ने पुलिस के उच्च अधिकारियों को दी।सूचना मिलने पर बुधवार को शाहजहांपुर के नवागत पुलिस अधीक्षक राजेश द्विवेदी,पुलिस अधीक्षक ग्रामीण भावरे दीक्षा अरुण ने गांव पहुंचकर ऋतिक के परिजनों से मामले की जानकारी ली।श्री द्विवेदी ने घटना के अनावरण के लिए एसओजी समेत कई पुलिस टीमों का गठन

किया है।एसपी ने बताया कि किडनैपिंग की कोई बात अभी तक सामने नहीं आई है।किसी की शरारत भी हो सकती है।प्रत्येक एंगिल से जांच की जा रही है।जगह-जगह बच्चे की तलाश की जा रही है।प्रत्येक बिंदु की तहकीकात की जा रही है। प्रयास जारी हैं।शीघ्र ही घटना का सफल अनावरण किया जाएगा।

पुलिस,एफएसएल व डॉग स्क्वायड संयुक्त टीम ने की काम्बिंग

शर्ट मिलने के बाद परौर,कलान,मिर्जापुर अल्हागंज,एफएसएल एवं डॉग स्क्वायड की संयुक्त टीम ने गोलागंज,नरायन नगला करीब लगभग 2 किलोमीटर दायरे में चारों तरफ काम्बिंग की।लेकिन ऋतिक का कोई सुराग नहीं लगा।ऋतिक का लापता होना परौर पुलिस के लिए परेशानी का सबब बना हुआ है।

महिला सब इंस्पेक्टर को सीओ व एसएचओ ने लगायी फटकार

एक तरफ कई थानों परौर,कलान,अल्हागंज मिर्जापुर पुलिस,एफएसएल व डॉग स्क्वायड की संयुक्त टीम लापता ऋतिक की शर्ट मिलने के बाद गोलागंज तथा नरायन नगला के खेतों में चारों तरफ काम्बिंग करने में व्यस्त थी।तो वहीं दूसरी तरफ परौर थाने में तैनात प्रशिक्षु महिला उपनिरीक्षक प्रभा चौधरी एक तरफ खड़े होकर मोबाइल पर चैटिंग करने में व्यस्त दिखीं।जिस पर जलालाबाद के सीओ अमित चौरसिया ने उन्हें फटकार लगाई।तो वह काम्बिंग में जुट गयीं।थोड़ी देर बाद वही महिला उपनिरीक्षक मोबाइल पर बात करने मशगूल हो गयीं।तो परौर के प्रभारी निरीक्षक अशोक कुमार सिंह ने उन्हें कड़ी फटकार लगायी।महिला दरोगा के ड्यूटी में लापरवाही की ग्रामीणों में खूब चर्चा रही।

प्रदेश में आज सुशासन बेहतर एवं कानून व्यवस्था का बोलबाला : अनिल राजभर

स्वतंत्र प्रभात

सिद्धार्थनगर । प्रदेश सरकार के सेवा, सुरक्षा व सुशासन की नीति के 8 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर मुख्य अतिथि मंत्री श्रम एवं सेवायोजन, समन्वय विभाग /जनपद प्रभारी मंत्री अनिल राजभर की अध्यक्षता में लोहिया कला भवन में केन्द्र सरकार/प्रदेश सरकार की उपलब्धियों की जानकारी लाभार्थियों एवं आम जनमानस को दिये जाने का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर मुख्य अतिथि मंत्री श्रम एवं सेवायोजन, समन्वय विभाग /जनपद प्रभारी मंत्री अनिल राजभर द्वारा सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग लखनऊ द्वारा प्रदेश सरकार के 8 वर्ष की उपलब्धियों पर आधारित विकास पुस्तिका का विमोचन किया गया। विभिन्न विभागों द्वारा लगायी गयी प्रदर्शनी का अवलोकन किया गया। प्रदेश सरकार के सेवा, सुरक्षा व सुशासन की नीति के 8 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर तथा महाकुम्भ प्रयागराज 2025 के सफल आयोजन पर केन्द्रित लघु फिल्म को देखा गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि मंत्री श्रम एवं सेवायोजन, समन्वय विभाग /जनपद प्रभारी मंत्री अनिल राजभर ने लोगों को सम्बोधित करते हुये कहा कि केन्द्र सरकार के 10 व प्रदेश सरकार के 08 वर्ष पूर्ण होने पर यह कार्यक्रम आयोजित किया गया है। यह कार्यक्रम नये भारत का नया उत्तर प्रदेश का है जिसे आप महसूस कर रहे हैं। प्रदेश सरकार के 08 वर्ष के शासन काल में देश के अन्दर किसी दूसरे जगह जाते हैं उत्तर प्रदेश का नजरिया बढ़ जाता है। मुख्यमंत्री की नीयत साफ है उत्तर प्रदेश को बीमारू राज्य से उठाकर विकसित व समृद्ध प्रदेश बनाया गया। 08 वर्षों में सिद्धार्थनगर के विकास के लिए इन्फ्रास्ट्रक्चर के निर्माण के लिए 08 हजार करोड़ मिला है। शादी अनुदान की राशि एक लाख कर दिया है।सबसे अधिक आवास का निर्माण हुआ। केन्द्र व प्रदेश सरकार सबका साथ-सबका विकास-सबका प्रयास की अवधारणा पर आगे बढ़ रही है। कार्यकम को विधायक श्यामधनी राही, विधायक जय प्रताप सिंह सिंह, विधायक विनय वर्मा, जिलाध्यक्ष भाजपा कन्हैया पासवान, जिला पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि उपेन्द्र सिंह, सांसद प्रतिनिधि रिंकू पाल, जिलाधिकारी डा0 राजा गणपति आर0, पुलिस अधीक्षक डा0 अभिषेक महाजन, मुख्य विकास अधिकारी जयेंद्र कुमार ने सम्बोधित किया। इस अवसर पर प्रभागीय निदेशक सा0वा0 वन प्रभाग पुष्प कुमार के0, अपर जिलाधिकारी गौरव कुमार श्रीवास्तव, मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ0 रजत कुमार चौरसिया, पीडी नागेन्द्र मोहन राम त्रिपाठी, जिला विकास अधिकारी गोपाल प्रसाद कुशवाहा, डीसी मनरेगा संदीप सिंह, जिला कार्यक्रम अधिकारी मनोज शुक्ला, जिला पूर्ति अधिकारी देवेन्द्र प्रताप सिंह, उपायुक्त उद्योग उदय प्रकाश व अन्य जनपद स्तरीय अधिकारी एवं लाभार्थियों की उपस्थिति रहे।

प्रदर्शनी के माध्यम से दी सरकारी योजनाओं की जानकारी

स्वतंत्र प्रभात

मथुरा। उत्तर प्रदेश सरकार के 'सेवा, सुरक्षा व सुशासन' के आठ वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर मथुरा जिला प्रशासन द्वारा ग्रोथ इंजन थीम पर पांचजन्य प्रेक्षाग्रह में 25 से 27 मार्च तक तीन दिवसीय मेले का आयोजन किया जा रहा है। आयोजन में मथुरा जिले के सभी विभाग जैसे नगर निगम, यातायात विभाग, बेसिक शिक्षा विभाग, माध्यमिक शिक्षा विभाग, आयुष विभाग, वन विभाग, सिंचाई विभाग, बाल विकास सेवा एवं पुष्टाहार विभाग, तथा अन्य विभागों ने उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं, उनके वर्तमान स्तर एवं उपलब्धियों की

विस्तृत जानकारी स्टालों के माध्यम से दी। प्रदर्शनी मेले में नगर निगम मथुरा वृन्दावन द्वारा भी नगर निगम स्तर से दी जाने वाले सुविधाओं एवं सरकारी योजनाओं का अधिक से अधिक प्रचार प्रसार हेतु स्टॉल प्रदर्शनी लगायी गयी है। पिछले 8 वर्षों में नगर विकास विभाग की जनकल्याणकारी योजनाओं एवं किए गए कार्यों की बुकलेट वितरित की गई। मेले में आने वाले आगन्तुकों को विभिन्न सरकारी योजनाओं के सम्बन्ध में जानकारी दिये जाने हेतु होर्डिंग स्टेण्डी बोर्ड लगाये गये हैं। साथ ही स्वच्छ भारत मिशन की टीम ने आगंतुकों को स्वच्छ सर्वेक्षण, डोर टू डोर कूड़ा संग्रहण, कूड़ा पृथक्करण, उसके पुनः उपयोग, सिंगल यूज प्लास्टिक प्रतिबंध आदि विषयों पर जानकारी प्रदान की। इसके अलावा, स्वच्छ भारत मिशन टीम द्वारा नागरिकों से स्वच्छ सर्वेक्षण 2024 के अंतर्गत अपनी प्रतिक्रिया भारत सरकार के आवासन एवं शहरी कार्य मंत्रालय द्वारा जारी पोर्टल पर साझा करने का आग्रह किया गया।

स्वामी धीरेंद्र शास्त्री के मदिरा मुक्ति आयोजन के उद्घाटन में शराब का तड़का, वीडियो वाइरल

स्वतंत्र प्रभात

मथुरा- बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री ने जिस कार्यक्रम का शुभारंभ किया, उसमें हुई शराब ओर हुक्का पार्टी, वीडियो सोशल मीडिया पर हुए वायरल,आयोजकों पर कार्यवाही की मांग कर रहे हैं बृजवासी, बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री ने मथुरा में जिस कार्यक्रम का 22 मार्च को दीप जलाकर शुभारंभ किया था , उसमें हुक्का और शराब पार्टी हुई. इस कार्यक्रम में शराब पीने के वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे हैं, जिनसे अब हड़कंप मचा है. यह भी सवाल उठ रहा है कि क्या बाबा बागेश्वर को बिना जानकारी दिए उनसे ऐसे कार्यक्रम का शुभारंभ कराया गया या फिर कोई साजिश के तहत ऐसा किया गया था। कार्यक्रम का आयोजन 22 मार्च को थाना जैंत इलाके के विवेक हेरिटेज में लायंस क्लब ऑफ स्टार्स की तरफ से किया गया था.इसमें सागर वाली कब्बाली का कार्यक्रम भी हुआ था। इस कार्यक्रम के उद्घाटन से पहले वृन्दावन में बागेश्वर पीठाधीश्वर धीरेंद्र कृष्णशास्त्री ने ब्रज को मांस-मदिरा से मुक्ति दिलाने के लिए जल्द बड़ी पदयात्रा करने की घोषणा भी की थी, और उसके बाद इस कार्यक्रम का उद्घाटन किया, और इस कार्यक्रम में शराब और हुक्का पार्टी हुई जिससे लगातार सोशल मीडिया पर बाबा बागेश्वर के इस कार्यक्रम में जाने का विरोध किया जारहा है, आयोजकों ने शराब और हुक्का पार्टी की परमिशन भी आबकारी विभाग से ली थी, और लगातार सोशल मीडिया पर इस पार्टी के बड़े-बड़े पैकेज देने के पंपलेट भी वायरल हो रहे थे, सवाल यह है कि जब आयोजकों को पहले से ही शराब और हुक्का पार्टी की परमिशन ली थी ,तो फिर बागेश्वर धाम के धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री से इस कार्यक्रम का उद्घाटन करने की क्या आवश्यकता थी ,इस के पीछे क्या कोई बड़ा षड्यंत्र है एक बड़ा सवाल है, कार्यक्रम में मौजूद कुछ महिला-पुरुषों के जाम छलकाते वीडियो अब सोशल मीडिया में वायरल हो रहे हैं. आबकारी विभाग से ली गई परमिशन का लेटर, कार्यक्रम आयोजकों द्वारा दी गई पंपलेट पर शराब पार्टी के पैकेज की डिटेल, धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री द्वारा कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए, वही श्री कृष्ण जन्मभूमि संघर्ष न्यास के अध्यक्ष दिनेश फलाहारी ने कहा सनातन विरोधियों द्वारा बागेश्वर महाराज को फसाने का षड्यंत्र रचा गया है- बागेश्वर महाराज धीरेंद्र शास्त्री को शराब माफिया द्वारा अपनी पार्टी का उद्घाटन कराने पर पंडित दिनेश फलाहारी ने कहा कि धीरेंद्र शास्त्री एक भोले भाले हनुमान जी के भक्त हैं, ऐसे सीधे-साधे व्यक्ति को षड़यंत्र के तहत शराब पार्टी का उद्घाटन कराना दुखद और चिंता का विषय है. बालाजी सरकार के कृपा पात्र धीरेंद्र शास्त्री द्वारा हिंदू राष्ट्र की मांग करने पर विपक्षी पार्टियों द्वारा धीरेंद्र शास्त्री को बदनाम करने के लिए ऐसा षड़यंत्र रचा गया है. पंडित दिनेश फलाहारी ने कहा कि धीरेंद्र शास्त्री सनातनी हिंदुओं के गौरव हैं, उनको बदनाम करने वालों के खिलाफ जांच होनी चाहिए. उन्होंने कहा कि आयोजकों को पता था कि यहां पर शराब पार्टी होने वाली है, उन्होंने सरकार से परमिशन भी ली थी, उसके बावजूद भी पंडित धीरेंद्र शास्त्री को वहां पर उद्घाटन के लिए बुलाया गया, सनातनी धीरेंद्र शास्त्री को मालूम नहीं था कि वहां पर शराब पार्टी चलेगी. उनको बदनाम करने के लिए यह षडयंत्रचा गया है. पंडित दिनेश फलाहारी ने षड्यंत्कारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की है. श्री कृष्ण जन्म भूमि मंदिर का केस लड़ रहे दिनेश फलाहारी ने लिखित बयान में कहा है कि यदि ऐसे षड्यंत्र कारीयों के खिलाफ कार्रवाई नहीं की गई तो वह भूख हड़ताल पर बैठेंगे को विवश होंगे.

रामनवमी शोभायात्रा 6 अप्रैल को, तैयारियों में जुटी महोत्सव समिति

मथुरा। श्री राम जन्मभूमि महोत्सव मेला समिति द्वारा छह अप्रैल को निकाली जाने वाली रामनवमी शोभा यात्रा महोत्सव की तैयारियों को लेकर प्रेसवार्ता मसानी लिंक रोड स्थित एक गार्डन में आयोजित हुई। जिसमें शोभायात्रा कार्ड विमोचन समिति के पदाधिकारियों के द्वारा किया गया। मेला संयोजक कन्हैया लाल अग्रवाल ने बताया कि छह अप्रैल चार बजे स्थानीय घीया मंडी प्राचीन राम मंदिर से विराट शोभायात्रा प्रारंभ होगी। उन्होंने बताया यात्रा का प्रारंभ संत महात्मा एवं राम भक्त द्वारा भगवान श्री राम की आरती के साथ होगा। समिति की अध्यक्ष राजेंद्र बंसल ने बताया शोभा यात्रा में घोड़े और बैंड बाजे के साथ श्रद्धालु शोभायात्रा में साथ चलेंगे। उन्होंने कहा कि 20 फीट का जय श्री राम का झंडा व भव्य स्वरुप में भगवान श्रीराम की प्रतिमा बनायी गयी है। इसमें भगवान श्री राम भक्त हनुमान तथा अयोध्या में विराजे श्री राम की आकृति का डोला मुख्य आकर्षण का केंद्र होगा। इसके साथ एक सौ से अधिक कार्यकर्ता भगवा कुर्ता, गमछा और पगड़ी में साथ चलेंगे। समिति प्रवक्ता श्याम शर्मा ने बताया शोभायात्रा डोरी बाजार विश्राम घाट छत्ता बाजार होली गेट चौराहा भरतपुर गेट होती हुई राम मंदिर पर समापन होगी। एवं शोभायात्रा को भव्य व आकर्षक बनाने के उद्देश्य से महिला मोर्चा एवं युवा विंग टीम द्वारा शहर के विभिन्न स्थानों पर बैठक तथा जनसंपर्क किया गया है। राम नवमी पर निकाली जाने वाली शोभायात्रा का मुख्य उद्धेश्य समस्त हिन्दू समाज को भगवान श्री राम के साथ जोड़ना है। उनके आचरण को अपने अन्दर समाहित करना है। महामंत्री हेमंत चतुर्वेदी व मंत्री रामदास चतुर्वेदी ने प्रेस वार्ता का संचालन किया। समिति के महामंत्री मनु ऋषि त्रिवेदी ने समस्त नगर वासियों से शोभायात्रा में उत्साह के साथ शामिल होने का अनुरोध किया है। इस अवसर पर जमुना देवी शर्मा, केशव पंडा, योगेश आवा, निखिल वार्ष्णेय, हर्षित अग्रवाल, मुकुंद गोस्वामी, डॉ संजय गुप्ता, पवन अग्रवाल, रामलाल शर्मा, विकास वार्ष्णेय, नितिन चतुर्वेदी, सौरभ खंडेलवाल, प्रदीप यादव, राहुल दुबे, भारत राजपूत,अजय अग्रवाल, मनमोहन अग्रवाल एवं गोपालाचार्य आदि उपस्थित थे।

सपा ने रामजीलाल सुमन को सुरक्षा देने की मांग की

मथुरा। बुधवार को समाजवादी अधिवक्ता सभा के पूर्व जिला अध्यक्ष गौरव किशनपुरिया एडवोकेट की अध्यक्षता में समाजवादी पार्टी के प्रमुख नेता एवं कार्यकर्ता मिलकर जिलाधिकारी कार्यालय पहुंचे। कार्यालय में तैनात डिप्टी कलेक्टर को ज्ञापन देकर पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं वर्तमान राज्यसभा सांसद रामजीलाल सुमन के लिए सुरक्षा की मांग की। किशनपुरिया ने कहा कि राष्ट्रीय महासचिव ने राज्यसभा में गृह मंत्रालय के कामकाज पर अपने विचार रखते हुए में शुक्रवार को जो बात कही उसपर क्षत्रिय समाज कि भावनाएं आहत होते देख कहा है कि मेरा मकसद किसी की धार्मिक भावना को ठेस पहुंचना नहीं था। सपा नेताओं ने कहा कि सांसद के स्पष्टीकरण के बावजूद भी देश और प्रदेश एवं मथुरा जनपद में लगातार बीजेपी के लोग धमकियां दे रहे हैं और पुतले फूंक रहे हैं। ऐसी स्थिति में सांसद को जान माल का खतरा है जिसको देखते हुए हम समाजवादी पार्टी ने आज ज्ञापन देकर उनको सुरक्षा उपलब्ध कराने की मांग की गई। प्रदर्शन के दौरान राष्ट्रीय सचिव समाजवादी छात्र सभा बादल राज बंसल, सपा समाजवादी एडवोकेट सभा के सचिव दीनदयाल पचौरी, पूर्व विधायक अनिल अग्रवाल, पूर्व जिला उपाध्यक्ष मनोज यादव, देवकीनंदन कश्यप, महिला सभा की अध्यक्ष सीमा करण, डा. राजेन्द्र प्रसाद लोधी, सोनू यादव, छोटू ठाकुर , प्रशांत अग्रवाल, विशाल पाराशर, वशीर खान, देवेन्द्र निषाद, नरेश शर्मा, मुकेश सैनी, पवन राजपूत आदि उपस्थित थे।

सड़क किनारे लगा परशुराम का बोर्ड तोड़ा

मथुरा। नौहझील थाना क्षेत्र के गांव सकतपुर की सड़क किनारे लगा परशुराम का बोर्ड अराजक तत्वों द्वारा तोड़ दिया गया जिससे गांव के लोगो मे आक्रोश पनप गया।बोर्ड तोड़ने की सूचना ग्रामीणों द्वारा डायल 112 पर दी गयी जिसके बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने ग्रामीणों को समझा बुझाकर शांत कराया और बोर्ड तोड़ने वाले अराजक तत्वों पर कार्यवाही का भरोसा दिया। नौहझील क्षेत्र के ब्राह्मण बहुल गांव सकतपुर की मुख्य सड़क किनारे परशुराम का बोर्ड लगा हुआ था जिसे मंगलवार की रात कुछ अराजकतत्वों द्वारा तोड़ दिया गया जिसके बाद ब्राह्मण समाज के लोगो मे आक्रोश पनप गया और पुलिस को सूचना दी।मौके पर पहुंची पुलिस ने आक्रोशित लोगों को शांत कराया और अराजक तत्वों की तलाश शुरू कर दी है। प्रभारी निरीक्षक नौहझील ने शैलेन्द्र सिंह बताया कि परशुराम का बोर्ड तोड़ने वालों की तलाश की जा रही है।